~~3329~~

सूरि
नगर.

शाश्वतधर्म

मई १९९२

सपादक - जे. क. सघवा

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल,बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,
* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृर्ति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल,कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ - आणंद
• श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ - जावरा

1813

शाश्वत धर्म

3329

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रधान सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि 382009

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र
कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३
शाश्वत धर्म कार्यालय
डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : 39 ★ अंक 12 ★ मई १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म मई १९९२

कहाँ ? क्या ?

सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
शीलत्व की सौरभ .... आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी ५
श्री अनन्तनाथ जिन स्तवन (१४) .... पू. मुनिराज श्री जयानंदविजयजी ११
भगवान ऋषभदेव .... श्री बसंतीलाल जैन १३
समकित बीसी .... स्व. श्री लक्ष्मीचंद सरोज २३
संस्कार और सत्ता .... स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी ३०
भारतवासियों के समक्ष एक चुनौती .... एक अपील ३४
शाकाहारी मनुष्यों के लिए अखाद्य वस्तुओं की सूची ... श्री जसकरण डागा ३९
तो सारा राष्ट्र कोढ़, कैंसर तथा
अन्य चर्मरोगों से ग्रसित होता रहेगा .... श्री जे. सी. चोपड़ा ४२
समाचार दर्शन ४७
शोक श्रद्धांजली ४९
परिपद के प्रांगण से ५१
आपका पत्र मिला ५२
समाचार सार ५५

स्थायी स्तम्भ

काव्य सुधा .... संकलित १८
स्वास्थ्य चर्चा .... संकलित १९
ऐतिहासिक कथा .... महेन्द्र जे. संघवी २१
ज्ञान कसौटी (१४) .... महेन्द्र जे. संघवी २५
शब्दसागर ईनामी स्पर्धा (१०) .... सा. प्रियसुदर्शनाश्रीजी २६
रूकिये! पढ़िये और सोचिये। .... प्रवासी २९
सरेराह चलते-चलते .... मुसाफिर ३३
एक दृष्टि समाचार पत्रों पर .... चकोरदृष्टि ३७

गुजराती विभाग

संयमधन नी सुरक्षा .... पं. श्री "कुमार श्रमण" ५७
घडूलो फुट्यो ने नीर वही गयां .... मु. श्री प्रशांतरत्नविजयजी ६१
नाम नी जेमने खेवना नथी एवा एक अनामी व्यक्ति
शेठ श्री देवजीभाई चांपशीभाई देढ़ीया .... किर्ती भाई वोहरा ६३

लेखकों के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

क्या हम पुनः महाजन बनेंगे?

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर जैनों का भव्य भूतकाल आज भी हमें प्रेरणा दे रहा है। अधिकांश राजाओं के मंत्री उस समय जैन हुआ करते थे। हमारे पूर्वजों ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और चातुर्य के बल पर सम्पूर्ण जन–मानस में एक गजब का विश्वास अर्जित किया था। गांव–नगर या राष्ट्र पर जब भी किसी भी प्रकार के संकट के बादल छाये हमारे पूर्वजों ने न सिर्फ योग्य मार्गदर्शन दिया था किन्तु तन–मन और धन से उसमें सदैव सहयोग भी दिया। इन सारी विशेषताओं को लेकर हम महाजन कहलाये। गांवो में विभिन्न जातियों में भी छोटे–मोटे झगड़ों का निवारण महाजन करते थे। जैनत्व की भूतकाल में इतनी उजली साख थी कि राजाओं के राजमहल में अंतःपुर तक भी बिना किसी पूर्व इजाजत के जाने में कोई बंदीश न थी। अभी देश के आझाद होने के पहले भी कोर्ट या मुकादमे में साक्षी में यदि जैन है तो उसे धर्मग्रंथ लेकर सोगंदनामे की जरूरत भी नहीं होती थी। अपने कर्तव्यनिष्ठ जीवनमूल्यों के कारण गांवो में जैनों/महाजनों की अदब थी। हर जाति/प्रजाति/समाज का व्यक्ति उसकी आन–बान–शान रखता था।

शान्ति के साथ गंभीरता से हम आज की परिस्थितियों का भी जायजा लें। आंखे मूंदकर वर्तमान को झुठलाया नहीं जा सकता। उपरोक्त स्थितियों में आज काफी बदालाव आ गया है। छोटे–छोटे गांवों में तो जहाँ जैनों के कम घर है उन्हें असुरक्षितता और दबाव की हालत में जीना पड़ रहा है। जहॉ सभी के झगड़ों का हम निपटारा करते थे, आज हमारी छोटी–छोटी बाते बाहर बाजार में आ रही है। आज भी अन्य लोगों के मुकाबले में अस्पताल, स्कूलों आदि सार्वजनिक क्षेत्र में दानादि में हमारा समाज सबसे आगे है, इसके बावजूद भी ***बदलती हुयी परिस्थितियों के लिए यदि हम मनोमंथन करेंगे तो पायेंगे कि एक दूसरे को नीचा दिखाने की एवं ईर्ष्या की भावना ने ही हमें इस स्थिती तक पहुंचाया है।*** *गच्छ सम्प्रदायों के विषयों को लेकर होनेवाली घटनाओं के मूल में भी राग और द्वेष ही कार्य करते हैं।*

अपने यहॉ सामाजिक सुधारों को मद्देनजर रखकर समय–समय पर कुछ नियमावली

बनायी जाती है। अक्सर देखा यह जाता है कि विशेषतया आगेवान ही, जानबुझकर उन नियमों का उल्लंघन करते है। किन्तु अपने पिछे सुदृढ़ गुट बनाकर किसी भी प्रकार के दंड से स्वयं बच जाते हैं, लेकिन कोई सीधे व्यक्ति द्वारा अनजाने में किसी नियम का भंग हो जाये तो उसे अपमानित या दंडित किया जाता है, इस प्रकार की प्रवृत्तियों से समाज दुर्बल बनता है। नियमावली का उद्देश्य समाज में सुधार नहीं अपितु किसी को निशाना बनाना रह जाता है। जिससे आम लोगों का शनैः शनैः सामाजिक न्याय से विश्वास उठता चला जाता है, जो सामाजिक एकता के लिये घातक सिद्ध होता है। कई बार सामान्य बातों को आगे लेकर उसे ढ़ाल बनाकर अपनी दुर्भावना के कारण पंचों द्वारा गलत न्याय दिये जाते हैं। फिर अपनी बात को सही साबित करने के लिये कई प्रकार की बातें, अफवाहें फैलायी जाती है। इस पंक्ति के लेखक को प्राप्त जानकारी के अनुसार एक पट्टी (अमुक संघों का समूह) के पंच प्रतिवर्ष सामाजिक न्याय एवं चर्चा विचारणा हेतु प्रतिवर्ष एकत्रित हुआ करते थे लेकिन पिछले ३–४ वर्षों से एकत्रित होना जानबुझकर टाला जा रहा है। व्यक्तिविशेष द्वारा बार–बार विनंती के बावजूद भी विलम्ब किया जा रहा है, फिर कहाँ रही सामाजिक न्याय करने या मांगने की बात। न्याय के नाम पर छोटी–छोटी बातों को महत्व देकर जानबुझकर जब उलझनें बढायी जाती है तब सारा दृश्य देखकर हमारी युवा पिढ़ि भी विस्मीत हो उठती है। गलत न्याय, स्वार्थ प्रेरित भावनायें एवं ईर्ष्या से भरे माहोल में सामाजिक वातावरण कभी स्वस्थ नहीं बन सकता। फलतः आज सामाजिक बन्धन क्रमशः ढीले पड़ते जा रहे हैं और समाज का एक अंग शराबखोरी, जुगार आदि की ओर कदम रख रहा है। कम या ज्यादा रूप में हर गांव/नगर में यह रोग फैलता रहा है और हम जानकर भी चुप्पी साधे हुए हैं।

यदि हमें खोये हुए गौरव को पुनः प्राप्त करना है तो वर्तमान सुधारना होगा। ईर्ष्या और स्वार्थ को छोड़कर गुणानुराग व परोपकार की भावना को जीवन में अपनानी होगी। किसी की निन्दा करने या सुनने में रस लेना छोड़कर सद्गुणों का आग्रही बनना होगा। 'पाप से घृणा करो, पापी से नहीं' – उक्ति के अनुसार भूले व्यक्ति को सुधरने का योग्य मौका देकर हरेक को प्रेम से साथ लेकर चलने की प्रकृति करनी होगी। आपस में भाईचारे की भावना, सहयोग की भावना बढाने के साथ जीवन मूल्यों में सत्य निष्ठा की स्थापना करनी होगी। यदि हम चाहते हैं कि हमारी अस्मिता अखंडित रहे तो क्षुद्र एवं क्षणिक स्वार्थों से उपर उठकर ईमानदारी के साथ समाज कल्याण एवं सर्वजन हिताय/सर्वजन सुखाय के मंत्र को हृदय में बसाकर पुनः महाजन बनने की ओर मंगल भावनाओं के साथ कदम आगे बढायें।

T. K. Sanghvi

अहंकार उपकारियों की पहचान नहीं होने देता, उसी प्रकार स्वयं के अपराधों को भी स्वीकार नहीं करने देता।

ऐतिहासिक कथा

शील की सौरभ

आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी

भ्रमण करता हुआ मैं मेरे बचपन से चिर परिचित नगर में एक बार जा पहुँचा। मन मे बड़ी उमंग थी, पर वहाँ के परिवर्तित दृश्य देखकर कुछ सोचने को भी मजबूर हो गया।
नगर के बाहर रहा हुआ वह वटवृक्ष, जो कभी अपनी शाखा प्रशाखाओं से पल्लवित हो फूलाफला रहता था, आज निष्प्राण-सा दिखाई दे रहा था और उसकी टहनियाँ रसहीन हो गयी थी। निर्जीव मानव कंकाल सा, ठूँठ होने की स्थिति तक पहुँचा हुआ वह भुतहा वटवृक्ष बड़ा बीभत्स लग रहा था। समय की मार अमोघ होती है। उससे कोई छूट नहीं सकता। आज का युवक कल देखते देखते मुमुर्षु दिखाई देने लगता है।

मुझे उस वटवृक्ष से बड़ा मोह था। अपने बचपन की कई चाँदनी रातें मैंने उसके साथ अठखेलियाँ करते हुए गुज़ारी थीं। उसकी जटा सी जड़े खींच-खींच कर, उनसे लटक-लटक कर उसे पौत्र सुख प्रदान किया था और उससे अपार स्नेह पाया था, पर अब जब मैंने देखा कि मेरा प्यारा वटवृक्ष अपने इतिहास के साथ संसार से अलविदा होने की तैयारी कर रहा है, तब मैं कुछ सोचने के लिए मज़बूर हो गया। मेरा विचार चक्र गतिमान हुआ।

''हे आत्मन्! बस यही संसार है! संसरण करना संसार का धर्म है। परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है। तूने यहाँ क्या पाया? क्या खोया? इस पेड़ की स्थिति का सम्यग् अवलोकन कर और इससे कुछ प्रेरणा ले।''

मैं कुछ उदास-सा हो गया और आगे बढ़ा। सामने देखा, तो एक मानव आकृति अपनी ओर आती हुयी दिखाई दी। चेहरा कुछ परिचित-सा लग रहा था, पर स्पष्ट याद नहीं आ रहा था। मैं सहज उसकी ओर देख रहा था। अचानक याद आया। अरे! ये तो हमारे गुरुजी हैं। बचपन में मैं इनके पास ही तो धार्मिक पाठ ग्रहण करता था। उस समय उनका जो रूप था, वह आज दिखाई नहीं दे रहा था। उनका वह रूप और प्रभाव तो कुछ और ही था।

जो कभी अपनी चमकीली आँखों से ही हमें अनुशासन में रखा करते थे, आज उनकी उन्ही आँखों पर मोटी फ्रेमवाला चश्मा लगा हुआ था। उन आँखों की तेजस्विता और चमक इतिहास में जमा हो गयी थी। जिनकी तेज तर्रार और गंभीर आवाज से हम भीगी बिल्ली बन जाते थे, आज उनका मुख अजन्ता की गुफा सा मूक बन गया था। वह निरीहता और भोलेपन से दयनीय हो गया था। गोरा चिट्टा, सेव सा खूबसूरत शरीर आज चूसे हुए आम-सा सलवट भरा दिखाई दे रहा था। शरीर में से व्यक्तित्व की सौरभ खत्म हो रही थी। उनके शरीर की प्रत्येक झुर्री अतीत की कहानी बन गयी थी। स्तंभ-सा उनका शरीर जो किसी भी प्रभाव के आगे झुकता नहीं था, वह आज १२०° का कोण बना हुआ था।

वे मेरे नज़दीक आये और मैं उनके आगे श्रद्धा से झुक गया। आखिर वे मेरे गुरुजी जो थे।

अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए मैं उनसे मिला। अतीत को बिदा करते हुए मन बड़ा उद्विग्न हो गया। परिवर्तन के शाश्वत नियम को कड़वे घूँट-सा गले के नीचे उतारा। उनके झुके हुए शरीर को देखकर सोचने लगा—

ये नीचे झुक-झुक कर क्या ढूँढ रहे हैं? लगता है, ये अपना अतीत ढूँढ रहे हैं, अपनी जवानी ढूँढ रहे हैं। अरे, यही तो संसार है। इसमें हर ताजा पदार्थ बासी होकर सड़ने लगता है।

किसलय चिक्कन और पुष्प केसर की महक से महकते पौधों के सूखे पत्ते अपनी शालीन दास्ताँ कहते हैं। उनके वर्तमान को सावधान करते हुए वे कहते हैं कि कल तुम्हारी भी यही दशा होनेवाली है।

पीपल पान खरन्त, हँसती कूँपलियाँ।
हम बीती तुम बीतसी धीरी वो बापलियाँ।।

पीपल का पीला पत्ता जो नीचे गिरा, तो कोंपलें हँसने लगीं। वे उसे तिरस्कार भरी नज़र से देखने लगी, तब वह पत्ता बोल पड़ा — "अरे! तुम लोग हँसो मत इठलाओ मत। हम पर जो आज बीती है, वही कल तुम पर बीतने वाली है। थोड़ा विचार करो।"

प्रकृति के प्राङ्गण में हम सूरज से लेकर एक नन्हे से पौधे तक का परिवर्तन नित्य देखते हैं, फिर भी स्वयं को अक्षुण्ण एवं अपरिवर्तनीय मानते हैं। प्रकृति का कण-कण जीवन की क्षण भंगुरता की कहानी सुनाता है, पर मनुष्य सुनता नहीं है। मनुष्य बड़ा अज़ीब है। अपने जीवन को सुधारकर वह दिव्य आत्मानुभूति में कभी रमण नहीं करता। छल, कपट, दंभ, मोह तथा वासनाओं में अपने जीवन की समस्त पूँजी गँवा बैठता है और जब इन्द्रियों की शक्ति का दिवाला निकल जाता है, तब वह ज्ञान और वैराग्य की शरण लेता है। ऐसे मुर्दादिल को ज्ञान और वैराग्य से भला क्या लाभ होने वाला है?

इस परिवर्तनशील संसार में जीवन बदलने वाले तीर्थंकर हो गये, प्रत्येक बुद्ध हो गये और वे मोक्ष मार्गी बन गये। जो कर्मकल्मश से स्वयं को मलिन करते रहे, वे संसार भ्रमण करते हुए नीचे ही नीचे नरकों में स्थान पाते गये। दोनों मार्ग अपने सामने हैं। हे पथिक! तू स्वयं सोच ले तुझे कहाँ जाना है?

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते?

इस परिवर्तनशील संसार में ऐसा कौन है, जो मरा नहीं है? जो जन्मता है, वह मरता ही है। फिर जन्म लेना किसका भला है? कीड़े-मकोड़े और चींटी-पतंगे की मौत मरते हुए अमर कौन बना है? इसलिए जीना है, तो हजारों के कल्याण के लिए और मरना है, तो करोड़ो से पूजा पाने के लिए ही। यही तो जिन्दा मौत है और शेष मरा हुआ जीवन।

जो सत्कृत्य और परोपकार से निज जीवन को सार्थक बनाते हुए समस्त विषय-कषायों से छुटकारा पाकर संसारी जीवों को सन्मार्ग की राह बताते हैं, वे ही अमर है। वे देवतुल्य हैं।

ऐसे देव पुरुषों का जीवन आदर्श बन जाता है। उनका मार्ग मुक्ति मार्ग बन जाता है, उनकी वाणी शास्त्र बन जाती है, उनकी दृष्टि करुणा आवर्त्तक और पुष्करावर्तक मेघ बन जाती है, उनका आवास तीर्थ बन जाता है और उनका यश भक्ति संगीत बन जाता है। तो क्या इस ओर कभी देखा

भी है? कभी सोचा भी है, इसके बारे में? कभी नहीं।

जन्म लिया अरू पदवी पायी, निवृत्ति आयी चल बसे।

यह जीवन दर्शन क्या है? किसका मार्ग प्रकाशमान करनेवाला है यह? दिन रात रोटी, कपड़ा और मकान के इर्दगिर्द चक्कर काटना कौनसा दर्शन है? अँजुली में रहे हुए पानी के समान यह आयु बूँद बूँद घटती जा रही है, यौवन बुढापे को आमंत्रित कर रहा है, लक्ष्मी विद्युत् सी चमक दिखाकर अदृश्य हो रही है। काल के व्याल मुख में देखते-देखते दादा, पिता, चाचा आदि जा रहे हैं और खुद अमरता के सपने सँजोये अकड़कर बैठा है। यह कैसी अक्ल है? कौनसी बुद्धिमानी है?

हम दूसरों के बारे में जितना सोचते हैं, उतना स्वयं के बारे में नहीं! दूसरों के गुण-दोषों को जीवन की शान पर चढ़ा कर उनकी आलोचना करने की कला कोई सीखना चाहे, तो सीख ले हम से। पर स्वयं के बारे में हम पूरे बेख़बर है। हम हमारे अधिकतम निकट रहे हुए स्वयं को नहीं देखते और हम दूर से आकाश के तारे गिन लेते हैं। यह ठीक नहीं है। सबसे प्रथम आवश्यक है निज को पहचानना। KNOW THYSELF स्वयं को पहचानो। भगवान का कथन है — जिसने एक को जान लिया, उसने सबको जान लिया। वह एक है स्वयं आत्मा। अप्प दीपो भव। स्वयं आत्मदीप बनो।

जरा स्वयं को देखो ! संसार में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को बुद्धिमान और दूसरों से ज्यादा संपन्न समझता है। जरा देखो तो सही, अपना धन है कितना ? क्या मूल्य है उस धन का ज्ञानी की नज़रों में ? कभी सत्पुरूषों, महात्माओं और संतों की वाणी का श्रवण किया है ? साधु पुरुषों के संग बैठकर, उनके दो शब्द सुनकर अपनी कुल जमा पूँजी का मूल्यांकन नहीं किया, तो फिर यह जीवन निरर्थक है।

संसार के ऐश्वर्य और भोगविलास को लात मार वैराग्य धारण कर जो वनवासी हो गये और साधना की असिधारा पर चलते हुए दुःखी और सन्तप्त आत्माओं का कल्याण कर गये, उन्हें मोक्षमार्ग का दर्शन कराकर जो स्वयं जीव से शिव बन गये, क्या उनकी ओर अपना ध्यान गया है ? क्या वीतराग द्वारा प्ररूपित धर्ममय जीवन स्वयं का बनाकर उसे सार्थक करने का प्रयत्न किया है ?

क्या परमात्मा के क्षमा भाव को जीवन में उतारने का कभी प्रयत्न किया है ? क्या सर्प सम दुष्टों के विष को अमृतोपम मानकर उसका प्राशन किया है ? उनके उपसर्गों को समता भाव से सहन कर क्या उन्हें शुभाशीष प्रदान की है ? भगवान महावीर के जीवन का जरा अवलोकन करो। कैसा था उनका उपसर्ग कर्ता के प्रति व्यवहार ? उनके प्रति भी उनकी आँखे करुणाभीनी हो जाती थीं।

कृतापराधे ऽ पि जने कृपामन्थरतारयोः।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं श्री वीरजिन नेत्रयोः॥

संगम देव ने उन पर छह-छह महीने तक अनेक प्रकार के उपसर्ग किये और उन्हें अनेक प्रकार की यातनाएँ दी; पर भगवान अपने ध्यान से जरा भी विचलित नहीं हुए। अन्त में संगम हारा और उनके आगे हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। बोला - "अब मैं चला। आप सुखपूर्वक विहार कीजिये।" उस समय भगवान की आँखों में आँसू डब-डबा आये। यह देखकर संगम आश्चर्य चकित

रह गया। वह पूछ बैठा - "अब जब कि मैं बिदा ले रहा हूँ, आपकी आँखे बाष्पार्द्र क्यों हो गयी?

इस प्रश्न का भगवान ने जो उत्तर दिया, उससे उनकी करुणा की व्यापकता प्रकट हो गयी। भगवान ने कहा - "संगम! तूने मुझे जो-जो भी कष्ट पहुँचाये हैं, वे तो कुछ भी नहीं हैं। ऐसे असंख्य कष्ट में सह सकता हूँ। मेरी आँखों से आँसू की एक बूँद भी नहीं ढुलकेगी। तू ऐसे दुःख सहन करने में अक्षम है। तेरे कर्मों का नरकादि गति में तुझे जो दुःख रूप फल प्राप्त होनेवाला है, उस समय तुझे होनेवाली छटपटाहट की कल्पना करने के कारण मेरी आँखों में ये आँसू आयें हैं। तेरे भावी दुःख को मैं सहन नहीं कर सकता। जा तू सुखी रह।"

यह है भगवान महावीर की दिक्काल व्यापिनी करुणा। बुद्ध और महावीर की करुणा में अन्तर है। महात्मा बुद्ध घायल हंस को देखकर करुणार्द्र हो गये थे, पर श्रमण महावीर घोर उपसर्ग कर्ता के प्रति भी समभाव युक्त रहते हुए उसके भावी दुःख की कल्पना से करुणार्द्र हो रो पड़े थे।

क्या अपने मन में इतनी व्यापक करुणा का संचार हुआ है? क्या अपने को कष्ट पहुँचानेवाले के लिए कभी मंगल कामना की है? क्या स्वयं कष्ट में रह कर अन्य प्राणियों से स्नेह एवं सहानुभूति का संबंध बनाये रखने की कोशिश कभी की है? क्या पारिवारिक संबंध को कर्मोदय जनित संबंध मानकर कभी सच्चा धर्मबोध प्राप्त करने की इच्छा की है? क्या कभी परनिंदा स्वयं के कर्णयुगल को गर्मशूल-सी लगी है? क्या कभी परायी औरत स्वयं की माता या बहन-सी दिखाई दी है? क्या कभी परधन पत्थर-सा नज़र आया है? यदि ऐसा नहीं हुआ है, तो हे भोले जीव! तू अभी धोखे में है। अब भी समय है, चेत जा, नहीं तो हाथ मलते रह जाना पड़ेगा। 'फिर पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।' जब तुझे सही तत्त्व का ज्ञान हो जायेगा, तब तुझे संसार अवश्य ही असार लगेगा। 'ज्ञाते तत्त्वं कः संसारः?

जीवन में सत्कृत्य है और ज्ञान भी है, फिर भी यदि निष्क्रिय रहे, तो उपलब्धि के रूप में शून्य ही है। 'दौड़ में कछुआ पहले पहुँच गया और खरगोश पीछे रह गया' माना कि गन्तव्य एक है, पर वहाँ तक शीघ्र पहुँचने के लिए लगन, स्फूर्ति एवं त्वरा की आवश्यकता है। क्रम टूटना नहीं चाहिये। क्रम टूटा तो पीछे ही रहना है। कछुए की चाल है कैसी? कहते हैं - 'नौ दिन चले ढाई कोस।' फिर भी वह खरगोश से पहले गन्तव्य तक पहुँच गया, इसलिए कि उसने अपना चलने का क्रम अटूट रखा और खरगोश ने अपना क्रम खंडित कर दिया, इसलिए वह पीछे रहा।

ज्ञानी पड़ा रहे तो निष्क्रिय है, शीलवान शीलपालन में विकल्प करे,तो वह जहाँ का तहाँ ही है। शीघ्रगामी क्रमशः गन्तव्य तक पहुँच ही जायेगा और केवल विचार करनेवाला कल के भरोसे बैठा मध्य में ही काल का ग्रास बन जायेगा। अतः सत्क्रिया की पगडंडी पर सतत चलते रहकर गन्तव्य को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिये, क्योंकि काल हिंस्र श्वापद की तरह अपनी टोह ले रहा है।

आज हम सबके सामने वीतराग प्रणीत प्रशस्त मार्ग है। उनके द्वारा प्ररूपित दान, शील, तप और भाव के अनेक उदाहरण आत्मज्ञान के संजीवनी उपचार हैं। इन चारों में से किसी एक का सेवन भी असाध्य भवरोग का रामबाण इलाज बन सकता है। आवश्यकता है सदाचार के पथ्य पालन और श्रद्धापूर्वक इसके सेवन की। कहा भी है—

पथ्य रसायण बन्ने, सेवे,माया मां ललचाय नहीं।
तो हरिदासतणा स्वामीने, मळता वार जराय नहीं।।

एक बार श्रद्धापूर्वक इस रसायन का सेवन करके तो देखो; फिर जब तक हिमालय है, गगन में जब तक चाँद हैं और सूरज अपनी सुनहरी किरणें पृथ्वी पर बिखेर रहा है तथा जब तक गंगा में निर्मल जल है, तब तक के लिए तुम्हारी यश-सरिता पृथ्वी पर बहती रहेगी, संसार तुम्हारा यशगान गाता रहेगा। इसमें कोई शक नहीं है।

देखते नहीं, इतिहास के पृष्ठों पर वस्तुपाल, तेजपाल, संप्रति, कुमारपाल, खाखेल, जगडूशाह, खेमा देदराणी, चंपाश्राविका आदि के नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। वे अपने आदर्श से युग-युग के लिए प्रेरणा के स्रोत बन गये।

सुभद्रा, कलावती शीलवती, चन्दनबाला, सुदर्शन सेठ और विजय-विजया के निर्मल शील की सौरभ आज भी संसार पवन को सुगंधित कर रही है। शील की खुशबू कभी कम नहीं होती। वह हमेशा बढ़ती रहती है। उनकी अमर गाथा आज भी अनेकों सज्जनों का मार्ग दर्शन कर रही है। उनका जीवनगान दुराचार के सागर में भटक रहे लोगों के लिए दीपस्तंभ सा प्रकाशदाता है। वह उन्हें ज्ञान-प्रकाश प्रदान कर रहा है।

यह अमर शील ज्योति है। क्या इसे किसी तेल या बत्ती की जरूरत है? नहीं! इस ज्योति का सीधा संबंध शीलसागर तीर्थंकर परमात्मा से है। परमात्मा इसका प्रधान ऊर्जागृह है। वहाँ के कलपुर्जे कभी खराब होते ही नहीं है और इस शील बल्ब का स्नेह फ्यूज कभी उड़ता ही नहीं हैं। यह ज्योति अटूट, शाश्वत, स्नेहिल और शीतल है। यही मोक्ष ज्योति है।

सिद्धि के लिए तप आवश्यक है। तप एक प्रकार का ताप है। प्रकृति भी भयंकर ताप के पश्चात् वर्षा की शीतलता प्रदान करती है। श्रमण भगवान महावीर ने अपना अधिकतम जीवन साधना की आग में तपाया, तब कहीं उन्हें तीर्थंकर पद प्राप्त हुआ। साधना का मूल तप है। तप एक यज्ञ है। इसमें इन्द्रिय विषयों की समिधाएँ जलायी जाती हैं और विषय-भोगों की बलि दी जाती है। कर्म कल्मष पूरीतरह जल जाने के पश्चात् ही शुद्ध आत्मज्योति प्रकट होती है। शास्त्रीय दृष्टि से जब तक कर्मों का आस्रव बंध जारी है, तब तक वासना का धुआँ जीवनाकाश में अपनी कालिमा पोतता ही रहेगा, क्योंकि इन्द्रिय विषय रूपी समिधा वासना से गीली है, वह जल नहीं रही है, केवल धुआँ छोड़ रही है।

आधुनिक विज्ञान भी मानता है कि मनुष्य योग साधना के बल पर क्षुत्पिपासा पर विजय प्राप्त कर सकता है और अपना जीवन जी सकता है। आत्म चेतना की योग साधना भूख-प्यास को कण्ठ में ही मिटा सकती है। योगवासिष्ठ में लिखा है — 'कण्ठे क्षुत्पिपासा निवृत्तिः।' योग साधना से आयु वृद्धि भी हो सकती है। उपवास जीवन की ऊर्जा को वृद्धिंगत करता है और आत्मा को निर्मल करता है, क्योंकि उपवास का अर्थ ही है शुद्ध आत्मा के निकट वास करना। अतः तपस्या में इन्द्रियों को लगा कर उनके विषयों का इस प्रकार क्षय करना चाहिये कि मन अपनी बहिर्मुखता छोड़कर अन्तर्मुखी हो जाये और आत्म-चिन्तन में सहायक बन जाये। तप की साधना से विभिन्न प्रदूषित पदार्थों का सेवन अपने आप बन्द हो जाता है।

तप मुख्य रूप से दो प्रकार का है — बाह्यतप और आभ्यन्तर तप। उपवासादि तप करना बाह्यतप है और प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और उत्सर्ग आभ्यन्तर तप है। बाह्य तप आभ्यन्तर तप पूर्वक करना चाहिये। इसीमें उसकी सार्थकता है। आभ्यन्तर तप रहित बाह्यतप केवल शरीर को दी गयी एक प्रकार की यातना ही है।

अष्टक प्रकरण में लिखा है—

ज्ञानमेव बुधा प्राहु: कर्मणां तापनात् तप:
तदाभ्यन्तर में वेण्ठं बाह्यं तदुपबृंहकम्।।

मुख्य रूप से कर्मों को जलाने वाला ज्ञानरूपी तप ही सच्चा तप है। बाह्य तप आभ्यन्तर तप की पुष्टि करता है तथा उसका पूरक होता है।

जैन दर्शन मोक्ष प्राप्ति के लिए तप को आवश्यक मानता है, पर श्रमण संस्कृति में से ही निकला हुआ बौद्ध धर्म या दर्शन तप को केवल देह दंड मानते हुए उसे निर्वाण प्राप्ति के लिए आवश्यक नहीं मानता।

बौद्ध दर्शन कहता है—

दु:खात्मनं तप: केचिन्मन्यन्ते तन्न युक्तिमत्।
कर्मोदय स्वरूपत्वात् बलीवर्दादि दु:खवत्।।

यथा बैल दु:ख भोगता है, तपता है और कर्म बन्धन करता है, वैसे ही तप दु:ख का स्वरूप है और मोक्ष का कारण नहीं है। तप आगम तथा युक्ति से अयुक्त है तथा अशुभ ध्यान वाला है, अत: आत्मा का अनर्थ करने वाला तप बुद्धिमानों को छोड़ देना चाहिये।

जैन दर्शन तप को दु:खरूप कतई नहीं मानता। उसका कहना है—

विशिष्ट ज्ञान संवेग: शमसारमतस्तप:।
क्षायोपशमिकं ज्ञेयमव्याबाध सुखात्मकम्।।

तप विशेष प्रकार के ज्ञान संवेग और शम से युक्त होता है और क्षायोपशमिक तथा अव्याबाध सुखस्वरूप होता है।

जैन सिद्धान्त तप को सुख का सार समझता है। जैसे धनार्थी सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास आदि सहन करता हुआ भी धन के उपार्जन में सुख मानता है, वैसे ही संसार से विरक्त तत्त्वज्ञानी भी सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास आदि सहन करने में और तत्त्वचिन्तन में सुख मानता है, परमानन्द मानता है, क्योंकि उसकी आँखों के सामने मोक्ष का अमृत सुख दृश्यमान है।

धनार्थिनां यथा नास्ति शीत तापादि दु:सहम्।
तथा भव विरक्तानां तत्त्वज्ञानार्थिनामपि।।

तप से ब्रह्मचर्य निर्मल बनता है, कषायों का नाश होता है और अनुबन्धसहित वीतराग की आज्ञा का पालन होता है।

वही तप श्रेष्ठ है, जिससे अशुभ ध्यान न हो और संयम व्यापार में बाधा उत्पन्न न हो तथा मन की इन्द्रिय विषयों में प्रवृत्ति न हो।

(शेष अगले अंक में)

भगवान ऋषभदेव

- श्री बसंतीलाल जैन

सात कुलकर

श्री ऋषभदेव भगवान प्रथम तीर्थंकर है। उनके जन्म के पहले इस भरतक्षेत्र में युगलिए रहते थे। उस काल में युगलधर्म प्रचलित था। युगल याने जोड़ा। उस काल में भाई और बहन का जन्म साथ साथ होता था। वे साथ साथ बड़े होते थे और फिर गृहस्थ-धर्म का पालन करते थे। उस काल में यह भरतभूमि भोगभूमि थी। युगलिए कल्पवृक्ष के नीचे रहते थे और कल्पवृक्ष से ही उनकी सब इच्छाएँ पूरी होती थीं। युगलियों को असि, मसि और कृषि का ज्ञान नहीं था। उनमें अपराध-प्रवृति भी नहीं थी।

धीरे धीरे समय बदलता गया। कल्पवृक्ष कम होने लगे और युगलिओं में अपराध वृति भी पनपने लगी। ऐसे समय में उस काल में बुद्धिमान युगलिए भी हुए। उन्होंने युगलिओं के आपसी झगड़े मिटाने के लिए प्रयत्न किये। उन्हें कुलकर कहते है।

प्रथम कुलकर विमलवाहन हुए। वे सफेद हाथी पर सवारी करते थे; इसलिए वे विमलवाहन के नाम से प्रसिद्ध थे। यदि कोई युगलिया किसी प्रकार का अपराध करता; तो वे उसे केवल 'हा!हा!' इतना ही कहते थे, यह 'ह' कार नीति थी। इससे युगलिया समझ जाता था कि मैंने बुरा काम किया है; इसलिए मेरी इज्जत चली गई। इतनी सजा उसके लिए पर्याप्त थी। इसके बाद वह अपराध करना छोड़ देता था।

विमलवाहन के बाद दुसरे कुलकर चक्षुष्मान हुए। उनके समय में भी 'ह' कार की दंडनीति चलती थी। तीसरे कुलकर यशोमान के समय में युगलिओं में अपराध वृत्ति फिर बढ़ने लगी। 'ह' कार की दंडनीति अब कमजोर होने लगी थी; इसलिए यशोमान कुलकर ने 'ह' कार के साथ 'म' कार की दंडनीति भी चलाई। वे सजा देते वक्त 'हा! हा!' तो कहते ही थे; पर इसके साथ वे इ मा! मा! भी कहने लगे। इसका अर्थ है—"अरे! तूने यह क्या कर दिया! यह तो बहुत बुरा है; आगे से ऐसा कभी मत करना।"

चौथे कुलकर अमिचंद्र तक 'ह' कार और 'म' कार ये दोनों दंडनीतियाँ जारी रहीं।

अमिचंद्र के बाद प्रसेनजित कुलकर हुए। उनके समय में 'ह' कार और 'म' कार दोनों का प्रभाव घटने लगा; इसलिए उन्होंने इनके साथ 'धिः' कार की सजा भी जोड़ दी।जब कोई युगलिआ अपराध करता तो वे 'हा! हा!' मा! मा! के साथ उसका धिक्कार भी करने लगे। अपराधी युगलिआ सरल स्वभावी होने के कारण इसे अपना सबसे बड़ा अपमान मानता और फिर अपराध करना छोड़ देता।

प्रसेनजित के बाद मरुदेव कुलकर हुए और मरुदेव के बाद नाभि कुलकर हुए। इनके समय में कम से कम सजा मे लिए 'ह' कार, मध्यम सजा के लिए 'म' कार और कठोर सजा के लिए 'धिः' कार की दंडनीति थी।

इस प्रकार उस काल में केवल शब्दों के उच्चारण मात्र से सजा दी जाती थी। देहदंड उस काल में प्रचलित

नहीं था।

उस कालमें राजसत्ता का संपूर्ण अभाव था; न कोई राजा था; न प्रजा; न कोई व्यापारी था और न कोई ग्राहक। उस काल में खेती का प्रचार भी नहीं था। उस काल में केवल कल्पवृक्ष और उनके नीचे रहने वाले युगलिए थे।

धीरे धीरे यह युगल-धर्म मिटता गया। भगवान ऋषभदेव ने इस युगल-धर्म को पुरी तरह मिटा दिया। उन्होंने इस भोगभूमि को कर्मभूमि में बदल दिया। समय के अनुसार परिवर्तन होना जरूरी था। भगवान ऋषभदेव इस भूमि के आदि राजा बने और उन्होंने राज्य व्यवस्था और समाज व्यवस्था जारी की। उन्होंने विवाह के नियम बनाये और लोगों को पारिवारिक जीवन जीना सिखाया। अन्त में उन्होंने आदि तीर्थंकर बन कर के लोगों को धर्ममय जीवन जीना भी सिखाया। इसलिए भगवान ऋषभदेव का दूसरा नाम आदिनाथ भी है।

भगवान का जन्म

श्री नाभिराज सातवें कुलकर थे। उनकी पत्नी का नाम मरुदेवी था। एक बार रात के समय मरुदेवी माता ने वृषभ, हाथी, केसरीसिंह, लक्ष्मी, फूलों की माला, चंद्रमा, सूर्य, इन्द्रध्वजा, पूर्णकलश, पद्मसरोवर, रत्नाकर, देवविमान, रत्ननिधान और अग्निशिखा के ये चौदह सपने देखे। सपने देखकर मरुदेवी जाग गई। उसने नाभिराज को वे सपने कह सुनाये। नाभिराज ने सपनों का फल बताते हुए कहा कि तुम्हें एक ऐसे पुत्र-रत्न का लाभ होगा; जो धर्म-तीर्थंकर बनेगा।

समय बीतता गया। चैत्र वदी अष्टमी के दिन मरुदेवी माता ने भगवान को जन्म दिया। छप्पन दिक्कुमारिकाओं और देवलोक के इन्द्रों ने भगवान का जन्म महोत्सव मनाया। मरुदेवी माता ने सपने में सबसे पहले वृषभ देखा था और भगवान की जंघा में वृषभ का चिन्ह था; इसलिए भगवान का नाम वृषभ रखा गया।

भगवान जब सालभर के हुए; तब इन्द्र महाराज उनके वंश की स्थापना करने के लिए हाथ में इक्षुदंड—गन्ना लेकर आये। उस समय भगवान नाभिराज की गोद में बैठे थे। इक्षुदंड देखते ही भगवान ने गोद में बैठे बैठे इक्षु लेने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। इससे इन्द्र को लगा कि भगवान की गन्ना खाने की इच्छा है। अतः इन्द्रने भगवान के वंश का नाम इक्ष्वाकु रखा। इस प्रकार सर्वप्रथम इक्ष्वाकु वंश की स्थापना हुई।

बड़े होने पर भगवान का विवाह हुआ। सुनंदा और सुमंगला भगवान की पत्नीयाँ थी। सुमंगला ने भरत नामक पुत्र को और ब्राह्मी नाम पुत्री को जन्म दिया। सुनंदा ने भी बाहुबली और सुन्दरी को जन्म दिया। इसके अलावा सुनंदा ने अठानबे पुत्रों को भी जन्म दिया। इस प्रकार भगवान के कुल सौ पुत्र हुए और दो पुत्रियाँ हुई।

भगवान के समय में युगलिओं में आपसी झगड़े अधिक बढ़ने लगे; तब इन्द्र महाराज ने भरतक्षेत्र में राज्य व्यवस्था निर्माण करने के लिए भगवान का राज्याभिषेक किया और उन्हें राजा बनाया। उन्होंने भगवान को मुकुट, कुंडल, हार वगैरह अलंकार पहनाये। भगवान के लिए इन्द्र महाराज ने विनीता नगरी बसाई और उस नगरी को महलों, बाजारों और मंदिरों से सुसज्जित किया। उस नगरी में सब प्रकार के व्यवसायी निर्माण हुए और

अपना अपना व्यवसाय करने लगे।

भगवान का लोकोपकार

युगलिओं के समय में कल्पवृक्ष बहुत थे; पर अब उनका अभाव हो गया था। कल्पवृक्षों कें अभाव में युगलिए कंदमूल, फल-पत्र वगैरह का आहार करने लगे। वे कच्चा अनाज खाने लगे। कच्चा अनाज न पचने के कारण उनके पेट में पीड़ा होने लगी। वे भगवान के पास गये।

उसी समय जंगल में बांस की लकड़ियों के घर्षण से आग उत्पन्न हुई। युगलिओं ने इसके पहले कभी भी आग देखी नहीं थी। उन्होंने सोचा, यह कोई रत्न है। वे उसे लेने दौड़े; तो उनके हाथ जल गये। वे भी अपना दुःख सुनाने के लिए भगवान के पास गये।

भगवान ने उन सबकी बातें सुनी। उस समय वे हाथी पर बैठे हुए थे। उन्होंने युगलिओं से कहा—तुम उस आग को तृणा-लकड़ी वगैरह की सहायता से ग्रहण करो। यह आग तुम्हारे लिए बड़े काम की है। इसमे तुम्हे अंधेरे में प्रकाश मिलेगा; इसके होने पर जंगली जानवर तुम्हारे पास नहीं आयेंगे और ठंड के दिनों में इससे तुम्हें गरमी मिलेगी। इस आग से तुम अपना अन्न पका कर खाओ।

फिर उन्होंने तालाब से गीली मिट्टी मंगवाई और उसमे बर्तन बनाकर उन्हे दिये। उन्हें बर्तन बनाना सिखाया। युगलिए आग और पानी की सहायता से बर्तन में खाना पकाने लगे और अपना भोजन तैयार करने लगे।

भगवान ने ब्राह्मी को दाहिने हाथ से अक्षर लिखना सिखाया और सुन्दरी को अंक लिखना सिखाया। ब्राह्मी भगवान के दाहिनी ओर बैठी थी और सुन्दरी बांयी और । इसीलिए अक्षर दाहिनी ओर से बायीं और लिखे जाते हैं और संख्या बायीं ओर से दाहिनी और पढ़ी जाती है।

इस प्रकार भगवान ने सर्व प्रथम भरत-क्षेत्र में अक्षर-ज्ञान और अंक-ज्ञान का प्रचार किया। उन्होंने भरत को रुपज्ञान-चित्रकला का ज्ञान दिया और बाहुबली को पुरुष-लक्षण पुरुष-कला, स्त्री-लक्षण और स्त्री-कला का ज्ञान दिया।

फिर उन्होंने अपना राज्य अपने सौ पुत्रो में समान रुप से विभाजित कर दिया और वे निवृत्त जीवन जीने लगे।

भगवान की दीक्षा व साधना

भगवान जब निवृत्त जीवन जी रहे थे; तभी उनका दीक्षा लेने का समय निकट आ गया। उस समय नौ लोकान्तिक देवों ने आकर भगवान से शासन स्थापना करने के लिए प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना सुनकर भगवान ने दीक्षा ग्रहण करने के पूर्व वर्षीदान देना शुरू किया। वर्षीदान देकर उन्होंने दीन-दुखीयों की दरिद्रता दूर की। दरिद्रता दूर होने से उनका दुःख भी दूर हुआ।

वर्षीदान के बाद चैत्र वदी आठम के दिन भगवान ने सर्व-संग-परित्याग करके दीक्षा ग्रहण की। देव-देवेन्द्रों ने उनका दीक्षा महोत्सव किया। इन्द्र ने भगवान के अंगपर देवदूष्य वस्त्र रखा। भगवान ने वह वस्त्र अपने शरीर पर धारण किया। भगवान के साथ चार हजार क्षत्रिय पुरुषों ने भी दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के समय भगवान ने बेले का तप किया था।

दीक्षा के बाद भगवान घोर अभिग्रह धारण करके गांव-गांव विचरने लगे। उस काल में लोगों को दान देने की विधि मालूम नहीं थी; इसलिए भगवान का तप बेले का होते हुए भी वह बढ़ता ही गया। बेले का तप बढ़ते-बढ़ते वर्षीतप हो गया। भगवान आहार के लिए निकलते थे; पर कोई उन्हें आहार नहीं देता था। उस काल में किसी को भी साधु-धर्म की जानकारी नहीं थी और उस काल में कोई भिक्षुक भी नहीं था। अतः भगवान के साथ चार हजार अन्य साधु भी भूख-प्यास से पीड़ित हो रहे थे। उनसे इस प्रकार रहा नहीं गया; इसलिए वे सब जंगल में जाकर तापस बन गये और कंद-मूल, फल-पत्र वगैरह खाने लगे और वृक्ष की छाल से अपना तन ढंकने लगे। भगवान के प्रति उनके मन में श्रद्धा थी; इसलिए वे उनका ध्यान करते थे।

भगवान के अन्तराय-कर्म का उदय था; इसलिए उन्हें साल भर तक आहार नहीं मिला। भगवान जहां जाते; लोग उन्हें धन-धान्य, वस्त्र-अलंकार, हाथी-घोड़े, कन्या इत्यादि अर्पण करते; पर कोई आहार नहीं देता था। भगवान वहां से निराहार लौट जाते थे। किसी को यह मालूम ही नहीं था; कि भगवान आहार के लिए घूम रहे हैं।

इस प्रकार भगवान विचरते-विचरते गजपुर नगर पधारे। वहां बाहुबली का पुत्र सोमप्रभ राजा राज्य करता था। सोमप्रभ का पुत्र श्रेयांसकुमार वहां का युवराज था।

एक बार श्रेयांसकुमार गोख में बैठे-बैठे नगरावलोकन कर रहे थे। उस समय भगवान नगर में आहार के लिए घूम रहे थे। घूमते-घूमते वे राजमहल के पास से गुजरे। श्रेयांसकुमार ने भगवान को देखा। भगवान को देखते ही उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। उसे मालूम हो गया कि भगवान आहार के लिए घूम रहे हैं। श्रेयांसकुमार तुरन्त नीचे उतर आया। वह भगवान के पास गया और उसने हाथ जोड़कर तीन प्रदक्षिणा-पूर्वक भगवान की वन्दना की। वन्दना के बाद सुखवार्ता पुछकर 'अब्भुट्ठिओ' बोलकर उसने भगवान से 'मिच्छामि दुक्कडं' मांगा।

फिर हाथ जोड़कर उसने भगवान से विनयपूर्वक प्रार्थना की—हे भगवान्! आहार पानी शुद्ध है; सेवा का लाभ दीजिये।

भगवान श्रेयांस के महल में पधारे। श्रेयांस को किसी गृहस्थ ने एक सौ आठ घड़े इक्षु रस से भर कर भेंट किये थे। श्रेयांस ने बड़े भक्ति भाव से उल्लास पूर्वक भगवान को वह इक्षु-रस वहोराया। भगवान ने अपने हाथ पसारे और करपात्र में वह इक्षु-रस ग्रहण किया। इस प्रकार साल भर के बाद भगवान का पारणा हुआ। देवताओं ने पारणे के उपलक्ष में श्रेयांस राजा के निवास पर पांच दिव्य प्रकट किये। चारों ओर भगवान का जय जयकार हुआ। जिस दिन भगवान के वर्षीतप का पारणा हुआ; वह वैसाख सुदी तीज का दिन अक्षय तृतीया कहलाया। आज भी तपस्वी लोग अक्षय तृतीया के दिन अपने वर्षीतप का पारणा करते हैं।

इस प्रकार दीक्षा लेने के बाद भगवान् ने एक हजार वर्ष तक चारित्र का पालन किया और तपस्या पूर्वक ध्यान-साधना की। एक बार फाल्गुन सुदी एकादशी के दिन जब भगवान अयोध्या के पुरितमाल उद्यान में न्यग्रोध वटवृक्ष के नीचे चौविहार अट्ठम-तप पूर्वक आत्मध्यान कर रहे थे; उसी समय भगवान ने शुक्ल ध्यान के बल पर अपने समस्त घाती

कर्मों का सम्पूर्ण नाश कर दिया। चारों घाती कर्मों का नाश होते ही भगवान के अनन्त चतुष्टय रूप आत्मगुण सम्पूर्ण रूप से प्रकट हुए। भगवान को केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त हुआ। भगवान सर्वज्ञ और सर्वदर्शी हुए।

भगवान को केवलज्ञान होते ही देवताओं ने समवसरण की रचना की। अष्ट प्रातिहार्य सहित भगवान समवसरण में जा बिराजे। भगवान के केवलज्ञान का समाचार मिलते ही भरत महाराजा मरुदेवी माता को साथ लेकर प्रजाजन समेत भगवान को वन्दना करने के लिए समवसरण में पधारे। बारह प्रकार की पर्षदा सम्मिलित हुई और भगवान उपदेशामृत की वर्षा करने लगे।

भगवान की माता मरुदेवी ने भगवान की याद में रो-रो कर अपनी आँखे खो दी थीं। समवसरण की याद में ही मरुदेवी माता हाथी पर बैठे-बैठे पुत्र को देखने के लिए अपनी आँखे मलने लगी। आँख मलने से आँखों के पडल दूर हो गये और एक पक्षीय प्रेम का विचार करके वह वैराग्य भाव में लीन हो गई। उसी लीनता में मरुदेवी माता को केवलज्ञान हो गया। और उसी समय वे अपने अंतिम शरीर का त्याग करके मोक्ष में चली गई। इस प्रकार इस वर्तमान चौवीसी में मरुदेवी माता ने सर्वप्रथम मोक्ष प्राप्त किया।

भगवान का निर्वाण

केवलज्ञान के बाद भगवान ने साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकारूप चतुर्विध संघ की स्थापना की। भगवान के चौरासी गणधर थे; उनमें सर्व प्रमुख प्रथम गणधर श्री ऋषभसेन पुडरीक थे। ब्राह्मी उनकी प्रथम साध्वी थी। भरत महाराज प्रथम श्रावक थे और सुंदरी प्रथम श्राविका।

भगवान ऋषभदेव बीस लाख पूर्व तक कुमारावस्था में रहे और त्रेसठ लाख पूर्व तक राजा बनकर रहे। इस प्रकार तिरासी लाख पूर्व तक वे गृहवास में रहे। दीक्षा लेने के बाद एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व तक वे केवली अवस्था में रहे। इस प्रकार भगवान की आयु कुल चौरासी लाख पूर्व की थी। उनकी देह की ऊँचाई पांच सौ धनुष्य की थी।

भगवान अपनी चौरासी लाख पूर्व की आयु समाप्त करके माघ वदी तेरस के दिन अष्टापद पर्वत पर दस हजार साधु-मुनिराजों के साथ मोक्ष में गये। देवताओं ने उनके पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार किया और उस जगह पर भगवान का एक स्मारक-स्तूप बनाया।

भरत महाराजा ने भी अष्टापद पर सिंहनिषिद्या नामक जिन-मंदिर का निर्माण किया और वहां पर चौबीसों तीर्थंकर भगवान की उनके देहमान के अनुसार प्रतिमाएँ स्थापित कीं। इस प्रकार भरत महाराजा ने अष्टापद तीर्थ का निर्माण किया।

भगवान तो मुक्त हो गये; पर उनके कार्य आज भी अमर हैं। लोगों को असि-मसि-कृषि-कला-कारीगरी तथा विद्या आदि का दान देकर भगवान ने विश्व पर बहुत बड़ा उपकार किया है। इतना ही नहीं; पर तीर्थ स्थापना करके उन्होंने लोगों के लिए मुक्ति का मार्ग भी सुलभ कर दिया। उनकी इसी महानता के कारण वेदादि ग्रन्थों में भी उनका आदर पूर्वक उल्लेख किया गया है।

ऐसे महान उपकारी पहले राजा, पहले मुनि, पहले योगी और पहले तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान को हमारा बार-बार वन्दन हो।

मंगल नमस्कार

अरिहन्तों को नमस्कार
श्री सिद्धों को नमस्कार
आचार्यों को नमस्कार
उपाध्यायों को नमस्कार
जग में जितने साधुगण हैं -२
मैं सभी को वंदु बार बार......अरिहन्तो को

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन
सुमति पद्म सुपार्श्व जिन राय;
चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांस नमी,
वासुपूज्य पुजित सुर राय;
विमल अनंत धर्म जस उज्ज्वल;
शान्ति कुंथु अर मल्लि मनाय;
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु;
वर्धमान पद पुष्प चढाय;
चौविसों के चरण कमल में - २
मेरा वंदन बार-बार....अरिहन्तो को...

सब जीवों को मोक्ष मार्ग का,
निष्पृह हो उपदेश दिया,
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा
या जिनेन्द्र या हो अवतार;
सबके चरण कमल में मेरा - २
वंदन होवे बार-बार.........................अरिहन्तो को
श्री सिद्धों को.....
आचार्यों को.....
उपाध्यायो को......

स्वास्थ्य चर्चा

श्री महावीर जैन [illegible]

मिलावटी चीजों की जाँच कैसे करें?

चीजे खाने की हो या पीने की आये दिन विज्ञापनों एवं अखबारों में मिलावट के चर्चे मिलते ही रहते हैं।

बहुत सी वस्तुओं में हम खुद ही महसूस करते है कि मिलावट है। दूध में पानी की और घी में वनस्पति की मिलावट तो रोजमर्रा की शिकायत है इसके अलावा मसालों, चाय आदि की मिलावट के बारे में छोटी–मोटी जाँच आप स्वयं कर लिया करें। इसके लिए किसी विशेषज्ञ की जरूरत नहीं होगी तथा बहुत सी बीमारियों से भी बचा जा सकता है।

कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि आज कल खाने की वस्तुओं में एक तिहाई तो मिलावट होती ही है। इसके कारण कुछ भी हो सकते हैं, लकवा, कैंसर यहाँ तक कि मौत भी। स्वयं जाँच करने के कुछ उपाय हैं। कुछ जाँच आसान तरीकों से तुरन्त की जा सकती है।

देशी घी – देशी घी में वनस्पति की मिलावट को आप भी पकड़ सकते हैं। दो चम्मच हाइड्रो क्लोरिक एसिड लेकर इसमें दो चम्मच चीनी डालिए। घोल बन जाने पर इसमें परीक्षण करने वाला एक चम्मच घी डाल दें। यदि परिणाम लाल रंग का पदार्थ हो तो आप निश्चित जान लें कि घी में मिलावट है।

चाय – आजकल मँहगाई के कारण लोग खुली चाय लेने लगे हैं। परन्तु यह शंका मन में बनी रहती है कि असली चाय है या नकली। नकली से अर्थ है, होटल आदि से जहाँ भी अधिक चाय पत्ती का प्रयोग होता है, पत्ती दुबारा रंग कर दुकान पर तो नहीं बिकने आ गई है।

घबराइए नहीं, यह तरीका आजमा लीजिए। सफेद कागज को हल्का भिगोकर थोड़ी–सी चाय के दानें इस पर बिखेर दीजिए। यदि कागज में रंग लग जावे तो समझिए कि आपका शक गलत नहीं है। क्योंकि असली चाय पत्ती बिना गरम पानी के रंग नहीं छोड़ती।

हींग – आजकल लोग थोड़ी सी हींग डालकर उसकी जगह गोंद या विरोजा आदि बेचने लगे हैं। परन्तु इसको बड़ी आसानी से परखा जा सकता है। पानी में घोलने से यदि घोल दूधियाँ रंग का हो जाता है तो हींग शुद्ध है वर्ना मिलावट होगी या फिर दूसरा परीक्षण करके देख लीजिए। एक हींग के टुकड़े को जलाइए यदि उसकी लौ पीली है तो हींग शुद्ध ही समझिये।

मीठी सुपारी – इसको पानी में डालकर परखा जा सकता है। एक बर्तन में पानी लेकर सुपारी का टुकड़ा उसमें डाल दीजिये। यदि सुपारी होगी तो पानी की सतह तक बैठ जायेगी और यदि लकड़ी के टुकड़े मिले होंगे तो वे पानी के उपर तैरने लगेंगे।

पीसी हुई लाल मिर्च – इसकी जाँच का एक बहुत ही आसान तरीका है। थोड़ा सा बुरादा पानी की सतह पर डाल दीजिए। यदि पानी में रंग घुलने लगे व बुरादा तैरता रहे तो आप का यह अनुमान सही होगा कि पिसी हुई लाल मिर्च में बुरादा मिला है।

काली मिर्च – काली मिर्च को भी परखने का वही उपाय है। एक गिलास पानी लेकर उसमें कुछ काली मिर्च डाल दीजिए। यदि पतीले में बीज है तो तैरने लगेंगे और काली मिर्च तली में बैठ जाएगी।

काफी – काफी की शुद्धता के लिए आप उसे पानी में घोलकर जांच कर सकते हैं शुद्ध काफी शीघ्र पानी में घुल जाती है। घुलने के बाद यदि तली में कुछ जम जाता है तो वह निश्चित रूप से अशुद्ध है।

शाह जीरा – इसमें मिलावट का पता लगाना बहुत ही आसान है। थोड़ा–सा जीरा लेकर केवल दोनों हथेलियों से रगड़कर देख लेना होगा। यदि हथेली में रंग सा छूटे तो समझिये कि मिलावटी जीरा है क्योंकि शुद्ध शाहजीरा रंग नहीं छोड़ता।

शाश्वत धर्म के पाठकों के लिये अभिनव भेंट योजना

मुनिराज श्री जयानन्द विजयजी द्वारा
लिखित/संपादित निम्नांकित हिन्दी साहित्य भेंट मिलेगा

प्रति पुस्तक दो रूपये के डाक टिकट डाक व्यय हेतु
'शाश्वत धर्म कार्यालय' जामली नाका, थानें
के पते पर भेजकर मंगवा सकते हैं –

(१) नमस्कार महामंत्र, (२) सम्यग्दर्शन, (३) पथ प्रदर्शक, (४) प्रगतिका प्रथम सोपान, (५) समाधान की राह पर, (६) दो प्रतिक्रमण सूत्र, (७) श्री विशतिस्थानक तप विधि, (८) भव्यात्माओं का भोजन, (९) भव्यात्माओं की भक्ति, (१०) मुक्ति का मंगल प्रारम्भ, (११) भक्तामर स्तोत्र, (१२) मुक्तिनगर मां प्रवेश, (१३) भक्तामर स्तोत्र (गुजराती), (१४) श्री जिनेन्द्र दर्शन स्तुति (मुनि श्री सम्यग्रत्नविजयजी द्वारा लिखित)

ढंढण अणगार

–श्री महेन्द्र जे संघवी (थाने)

वासुदेव श्रीकृष्ण के पुत्र श्री ढंढण कुमार ने अपने पूर्ण यौवन काल में २२वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के वरद्‌हस्तों से चारित्र्य अंगीकार किया । वे स्वभाव से बहुत विनयी और मितभाषी थे ।

कुछ समय साधु जीवन मे व्यतीत करने के बाद उनके पूर्व संचित अंतराय कर्मों का उदय हुआ, जिससे वे जँहा कहीं भी गोचरी(भोजन) के लिये जाते, उन्हें गोचरी का योग ही नहीं होता। झोपड़ी से लेकर गगनचुंबी अट्टालिकाओं तक से भी उन्हें गोचरी प्राप्त नहीं होती। उनके कर्म का उदय इतना प्रबल और प्रगाढ था कि उनके साथ जानेवाले अन्य मुनिराजों को भी गोचरी से वंचित रहना पडता था। इसी प्रकार कई महिने बीत गये।

एक बार अन्य साधुओं ने भगवान से पूछा-"भगवान! इस ढंढण मुनि ने पूर्व भव में ऐसा कौन सा अपराध किया था जिसके कारण इन्हें और इनके साथ जाने वाले मुनियों को कहीं भी गोचरी का संयोग ही नहीं होता"।

इस पर भगवान नेमिनाथ ने ढंढण मुनि का एक पूर्व भव सुनाते हुये कहा-"अपने पूर्व भव में ढंढण, मगध प्रान्त के धान्यपुर ग्राम में पारासर नामक ब्राम्हण था। वह वहाँ राजा की ओर से कृषि अधिकारी नियुक्त किया गया था। कठोर स्वभावी पारासर ग्रामीणों से राज्य की भूमि में खेती करवाता और दोपहर में भोजन के समय भी उन्हें भोजन के लिये छुट्टी न देकर काम मे लगाये रखता। इसी प्रकार भूखे-प्यासे बैलों से भी जरुरत से अधिक कार्य करवाता। पारासर के भव के यही दुष्कर्म अब उदय में आये हैं।

भगवान से यह वृत्तांत सुनकर ढंढण मुनि ने प्रभु को नमस्कार कर उसी वक्त यह अभिग्रह ग्रहण किया कि- भविष्य में मैं कभी भी दूसरों के द्वारा प्राप्त हुआ भोजन ग्रहण नहीं करूँगा। मेरे अंतराय कर्म क्षीण होने के पश्चात मेरे स्वयं के निमित्त से मिला भोजन ही ग्रहण करूँगा।

अंतराय कर्म की प्रबलता के कारण ढंढण मुनि को कहीं से भी भिक्षा नहीं मिलती थी। तथा अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अन्य मुनियों के द्वारा लाया हुआ आहार लेना नहीं था। अत: मुनि की कई दिन की निरंतर निराहार तपस्या हो गयी। वे इस तपस्या को समभाव और अविचल रुप से सहन करते रहे।

एक दिन वंदन करने आये कृष्ण महाराजा ने भगवान नेमिनाथ से प्रश्न किया भगवान! आपके मुनिमंडल में कठोरतम साधना करने वाले कौन से मुनि है? भगवान ने उत्तर दिया—

वैसे तो सभी मुनि कठोर साधक ही हैं पर फिर भी इन सब में
ढंढण कुमार की साधना ही श्रेष्ठतम है। इतनी उग्र तपस्या के बावजूद भी उनके मन में लेश मात्र भी दु:ख, क्रोध, क्षोभ या ग्लानि को स्थान नहीं है।

यह सुनकर श्री कृष्ण बड़े प्रफुल्लित हुये तथा भगवान को नमन कर मन ही मन में ढंढण मुनि के बारे में सोचते हुये अपने महल की ओर प्रस्थान किया। राह में उन्होंने गोचरी के लिये जाते ढ़ंढण मुनि को देखा। ढंढण मुनि को देखते ही वे हाथी से उतरे और उन्हें प्रणाम किया।

दूर से अपने भवन से यह नजारा एक श्रेष्ठी निहार रहा था। वह सोचने लगा- धन्य है यह मुनि जिन्हें महाराज श्री कृष्ण नें भी हाथी से उतरकर भावपूर्वक वंदन किया। उस दिन संयोग से मुनि उसी श्रेष्ठी के यहाँ पँहुचे। सेठ ने बड़े ही भावभक्तिपूर्वक मुनिराजश्री को लड्डू वोहराये।

भिक्षा लेकर ढंढण मुनि सीधे पहुँचे भगवान के पास और वंदन कर बड़ी विनम्रता से पूछा ''प्रभु! क्या मेरा अंतराय कर्म आज क्षीण हो गया है, जिससे मुझे भिक्षा मिली।'' भगवान ने कहा ''—अभी तुम्हारा अंतराय कर्म उसी प्रकार जारी है। श्रीकृष्ण ने तुम्हे जो प्रमाण किया था, उसके प्रभाव से सेठ ने तुम्हे भिक्षा दी।''

भगवान के मुखारविंद से यह सुनकर मुनि ढंढण ने विचार किया कि यह भिक्षा मेरी स्वयं की लब्धि की न होकर किसी अन्य की लब्धि द्वारा प्राप्त हुयी है। अत: इसे एकान्त में परठ देना चाहिये।

इतनी उग्र तपस्या में इतने महिनों बाद जब भिक्षा मिली तो वह भी परठने चले एकान्त में। मनोभाव कितने प्रबल मुनि के! कितना दृढ निश्चयी मन! कितने अविचल मुनि महाराज!

एकान्त में पँहुचने के बाद मुनि ने रजोहरण से स्थान साफ किया तथा लड्डू वहाँ परठते परठते विचार करने लगे कि कर्म का बंधन कितना शीघ्र हो जाता है जबकि कर्म से मुक्ति कितना विलंब लगता है। कर्मों का बंधन हँसते- हँसते और बहुत ही आसानी से हो जाता है जबकि उनसे छुटकारा पाना बहुत ही मुश्किल और दुष्कर कार्य है। काश प्राणी कर्मो को बाँधते समय सोचे कि कभी न कभी ये खुद उसी को भोगने हैं। तब कोई उसका साथ नहीं देगा कर्मों को हलका करने में। इसी विचारों में बहते-बहते मन के भाव इतने शूद्ध हो जाते है कि वही पर ढंढण मुनि को केवल ज्ञान प्राप्त होजाता है अपने सभी कर्मों को खपाकर इस प्रकार ढंढण मुनि मोक्ष के अधिकारी बन जाते हैं।

ये वही पुण्यात्मा ढंढणमुनि हैं जिनका स्मरण हम प्रतिदिन सुबह के प्रतिक्रमण में भरहेसर की सज्झाय में करते हैं!

पृष्ठ ६४ का शेष.........

પણે. વ્યાખ્યાન હોય તો તેમાં તેમની અચુક હાજરી હોવાની જ અને દોઢ-બે-કલાક ચાલતાં વ્યાખ્યાનમાં આ બંને બંધુ આંખો બંધ કરી અવિચલ પણે બેઠા હોય. અને વ્યાખ્યાનનો એક એક શબ્દ અંતરમાં જાણે ઉતારતા હોય એવું લાગે છે. મેં ઘણી વખત ખોયું છે કે સાધુ હોય કે સાધ્વી કોઈની પર સામે જ્યોર તેઓ બેઠા હોય ત્યારે તેમની આંખો તો બંધ જ હોય છે અને તે પર થી લાગે છે કે તેઓ બાહ્ય ચક્ષુ કરતાં આંતરચક્ષુથી નીરખવાનો સાચો આનંદ અનુભવે છે.

હું માનું છું કે ગાંધીધામ શહેરમાં વસતા જૈનો-માં કચ્છના-ગુજરાતના સૌરાષ્ટ્રના. રાજસ્થાન કે મધ્યપ્રદેશના-અલગ અલગ સંપ્રદાય અને ગચ્છના જૈનો હોવા છતાં જે ગચ્છ કે સંપ્રદાયના ભેદભાવ વગર એક સંપથી રહે છે. તેના કારણમાં આ બધું બેલડી શ્રેષ્ઠિ શ્રી દેવજીભાઈ અને શ્રી નાનજીભાઈની ધર્મ પ્રત્યેની શુદ્ધ ભાવના. ત્યાગ ભાવના-નિષ્કામ વૃત્તિ. કામ કરી રહી છે મારી શાસનદેવ ને પ્રાર્થના છે કે આ બધું બેલડીના સમાજોપયોગી ધાર્મિક કાર્યો કરવા તંદુરસ્તીપૂર્ણ લાંબુ આયુષ્ય આવે.

—શ્રી કીર્તિલાલ હાલચંદ વોરા થરાદવાલા (ગાંધીધામ)

समकितबीसी

(जब चार बरस पहले, आलौट में लौकिक और धार्मिक शिक्षण का प्रसंग आया था, तब योगशास्त्र अध्यात्म कल्पद्रुम, दशवैकालिक जैसे उच्च धर्म-ग्रंथ जहाँ पढ़े थे, वहाँ एक से अधिक छोटी मोटी पुस्तकें भी पढी थीं। उनमें से एक ७० वर्ष पूर्व प्रकाशित 'आत्म प्रकाश' में संकलित कविता भी पढ़ी थी, जिसे 'संमकित बीसी' शीर्षक दिया जा सकता है। इसके कवि का नाम नहीं लिखा था। कभी इस कविता के विषय में निबंध लिखूंगा; विचार कर कविता की एक प्रतिलिपि कली थी। दोहा छन्द का निर्वाह बखूबी है, अतएव इस कविता में नाम मात्र का यत्किंचित सुधार-संशोधन भी मैंने कर दिया था। आशा है सम्यग्दर्शन के अनुरागियों के लिए यह कविता भी सुरुचिपूर्ण और दिशा बोधक लगेगी। 'शाश्वत धर्म' के किसी भी पाठक को कविता के कवि का नाम ज्ञात हो तो साधार-संकेत करेंगे। मध्य युग में बीसी, बाइसी, पच्चीशी. बत्तीशी, पचासा, बावनी, शतक, सतसई रुप में लिखनें की परम्परा रही, अतएव इसी प्रकार का शीर्षक दे दिया था।

समकित की औषधि लगे, मिटे कर्म का रोग।
कोयला छांडे कालिमा, होत अगिन संजोग।। १ ।।
समकित रुपी चांदनी, जिहे घट करे प्रकाश।
तिहँ घट में उद्योत है, होत तिमिर को नाश।। २ ।।
समकित रुप अनूप है, जो पहचाने कोय।
तीन लोक के नाथ की, महिमा पावे सोय।। ३ ।।
कूकर विषय-विकार सम, मत गह मूढ़ गँवार।
समकित रस तू चाखि ले, गुरु-मुखकर निर्धार।। ४ ।।
मन-वच-तन थिरता हुए जो सुख समकित माहि।
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र के ता समान सुख नांहि।। ५ ।।
समकित से प्रभु बनत है, समकित सुख को मूल।
समकित चिंतामणी तज, मत भटको कहुं भूल।। ६ ।।
बिन सम्यक्त्व विचार के, तूं जंगल का रोज।
मिथ्या यों ही पचत है; क्यों न करे अब खोज ।। ७ ।।
समकित के जाने बिना, मति भसै ज्यों स्वान।
लोक गडरिए चाल तीजि; अब आपो पहचान।। ८ ।।
जगत मोह-फाँसी प्रबल, करे न सत्य उपाय।
कर संगत सम्यक्त्व की, सहज सुखी हो जाय।। ९ ।।
अति अगाध संसार-मद, विषय नीर गंडीर।
समकित बिन नहीं पार लहि, कोटि कर हु तदबीर ।। १० ।।
विषय वासना तजे तो, आवे समकित ईस।

त्रेसठ होवे सच समझ, क्षण भर में छत्तीस।। ११ ।।
गुरु अन्ध सिख अन्ध है, लखे न बाट कुबाट।
बिन समकित भटकत फिरै, खुले ना हृदय कपाट।। १२ ।।
जाण्यो दावानल सदृश, नारी-धन-समुदाय।
ताते जो न्यारो रहे, सो समकित कहाय।। १३ ।।
जीवादिक सब तत्व को, सोचो अनुभव पाय।
श्रद्धा बैरागी करी, तो समकिती कहाय।। १४ ।।
पांचो द्रव्य अचेत हैं, जीव चेतना वन्त।
भेद ज्ञान करि जो लखे सो नर समकितवन्त।। १५ ।।
समकित का सुख पाइये, सत्य वचन साक्षात्।
सांचे में समकित् बसे, माया में मिथ्यात।। १६ ।।
सकल पदारथ में अरथ, आप रुप अवधारि।
निर्विकल्प सा लीन हवै, सम्यगदृष्टि निहारि।। १७ ।।
सम्यग्दृष्टी जीव के, होत यथारथ दृष्टि।
नय विलास से जगमगे केवल गुण की तुष्टि।। १८ ।।
जो सम दृष्टी जीव है, क्षयोपशम को पाय।
सत्ताद्रव्य स्वरुप वे, लखें यथारथ भाय।। १९ ।।

-श्री लक्ष्मीचन्द्र 'सरोज'

प्रभु महावीर के शुभ ध्यानमें मन मेरा तल्लीन हो।
जिससे मिटे संताप सब ही मन कभी न मलीन हो।।
शुभ ध्यान से मन शुद्ध होकर विवेक जागृत हो सके,
शुभ भावनाएँ फलीभूत हो, सुमति सुगति दे सके।
मन की तरंगे लुप्त हो कर, एकाग्रता मन पा सके,
शुभ भाव परिणति चैतन्य की जीवन में ज्योति जगा सके।।
निःशल्य वृत्ति का ही मानस भाव विशुद्धि पा सके,
अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह से वीतराग दृष्टि आ सके।।

श्री. सौभाग्यमल जैन (एडव्होकेट)

रुकिये ! पढ़िये और सोचिये !

- पृथ्वी और पर्यावरण – आज से डेढ–दो दशक पूर्व ये शब्द अपरिचित लगते थे। पूर्व में लोग खुली व शुद्ध हवा में सांस लेते थे। नदियों, कुओं, तालाबों का बिना छाना हुआ पानी भी आज के बीसियों बार 'फिल्टर्ड वाटर' के मुकाबले कहीं ज्यादा शुद्ध, स्वच्छ, मीठा, और स्वास्थ्यवर्धक होता था।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (युनेप) ने एक टिप्पणी में बताया है कि हमारी सभ्यता पर आज गहरा संकट मंडरा रहा है, क्योंकि हम प्राकृतिक संसाधनों का दुरूपयोग करके प्रकृति की व्यवस्था को गड़बड़ा रहे हैं। पृथ्वी को हम उस स्थिति की ओर ले जा रहे हैं, जहाँ उसकी क्षमता जवाब दे जाएगी. . . .।
- भारत दुनिया के उन गिने–चुने मुल्कों में से है जहाँ व्यावसायिक–गैरव्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पेड़ों की हत्या सर्वाधिक हो रही है।
- इस समय देश में हर साल १५ लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वन काटे जा रहे हैं, जबकि उनके स्थान पर ५० हजार हेक्टेयर भूमि पर नये वन लगाये जा रहे हैं। नतीजतन केवल १६ फीसदी क्षेत्र में वन रह गए हैं जबकि पर्यावरण संतुलन के लिए कम से कम ३३ प्रतिशत क्षेत्र वनों से ढंका होना चाहिए।
- भारत में कुल दुनियाँ की १५ फीसदी आबादी रहती है जबकि पृथ्वी का केवल २ फीसदी वन क्षेत्र भारत में है और उस पर भी लगातार प्रहार हो रहे हैं।
- विश्व में हर साल दो करोड़ हेक्टेयर भूमि अपनी उत्पादक क्षमता खोती जा रही है।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण ब्यूरो के अनुसार समूचे विश्व में हर साल ४० करोड़ टन जहरीला कचरा बनता है।
- पेड़ पौधे हमारे जीवन की आधारशिला हैं। अफसोस की बात हैं कि इसके बावजूद भी जंगल लगातार काटे जा रहे हैं।
- विशेषज्ञों की चेतावनी है कि जंगलों के इसी रफ्तार से कटने के परिणाम इतने गंभीर होंगे कि भारतीय सभ्यता के सामने अस्तित्व का संकट खडा हो सकता है।
- जंगलो की अंधाधुंध कटाई के कारण मिट्टी का क्षरण छह लाख अरब टन प्रतिवर्ष तक पंहुच गया है। पूर्वोत्तर भारत में बाढ़ आम बात हो गयी है और जमीनी पानी खतरनाक रूप से कम हो रहा है, इसे देखते हुए भारत को सन् २००० तक कम से कम पांच अरब पेड़ लगाने चाहिए और प्राकृतिक जंगलों को जैव अभयारण्य घोषित कर जीव–जंतुओं और वनस्पति को बचाया जाना चाहिए।

प्रवासी

संस्कार और सत्ता

स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

सफलता प्राप्त करनेवाले अनेकानेक अन्यान्य साधनों में मनुष्य के लिए संस्कार भी एक अमोघ साधन है। सभी साधन एक करने पर भी संस्कार का बल न हुआ तो कार्य सिद्धि सफल नहीं हो सकती। आये दिन कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि मनुष्य अत्यधिक श्रम करता है फिर भी उसे सफलता नहीं मिलती। मिले कहां से, संस्कार हो तब न! एक वैभव-शाली धनपति अपने पुत्र को पढ़ाने के लिये वैभव और धन के बल पर कई अच्छे सुयोग्य शिक्षकों को एकत्र करता है और उपयोगी अन्य कई साधनों को जुटा कर यह अपेक्षा करता है कि भगवन्! किसी न किसी प्रकार मेरा पुत्र पढ लिख कर, विद्वान और गुणवान बन जाय. परन्तु कुसंस्कार वश धनपति की आशाओं पर तुषारापात हुए बिना नहीं रहता और फल-स्वरूप उसका पुत्र जिसको सुशिक्षित एवं विद्वान बनाने के लिए कई साधन जुटाये गए हैं, मूर्ख ही रह जाता है।

इसके विपरीत एक दीन-हीन, निर्धन का पुत्र जिसके पास न भर पेट खाने को अन्न मिलता है, न शरीर को ढकने के लिए समय पर वस्त्र मिल पाता है। वह साधनहीन होने पर भी अपने संस्कारों के बल पर इतना विद्वान बन जाता है कि लोग देखकर उसके सौभाग्यवर्धक संस्कारों के साथ प्रतिस्पर्धा करने लगते हैं। चाहे उनको मिटाने का कितना ही प्रयत्न क्यों न किया जाय! बहुत से मनुष्य साधन सम्पन्न होते हुए भी मूर्ख एवं असभ्य रह जाते हैं। यदि किसी कारण यह पढ भी गए, कई परीक्षाएँ उत्तीर्ण भी कर ली, फिर भी उनकी मूर्खता और असभ्यता के जन्म सिद्ध कुसंस्कार भरी हुई सभा के बीच उन्हें मूर्ख और असभ्य कहलाने के लिए बाध्य करते हैं। कारण कि अपठित मूर्खों के अतिरिक्त कई स्थानों पर पठित एवं अर्धदग्ध मूर्ख भी मिला करते हैं। यद्यपि उनमें विद्या रहती है, वे शिक्षा सम्पन्न भी होते हैं, फिर भी वे अपने कुसंस्कारों के कारण मूर्ख और अशिक्षित ही माने या गिने जाते हैं।

नीति शास्त्रकारों ने समझाया है कि चाहे कस्तूरी के खाद में कपूर जल से सींच कर लहसुन को उगाया जाय, शक्कर का पानी डाल कर नीम को बड़ा किया जाय और चिरायते को हजार वर्षों तक लोंगों में रखा जाय, या दूध से सींचा जाय, परन्तु वे सब अपने कुसंस्कार (मूल स्वभाव) को कभी नहीं छोड़ते।

ठीक ही है जिस प्रकार मिट्टी की बनी हुई कोठी को ज्यों-ज्यों जल से धोई जाय त्यों-त्यों उस में से मिट्टी ही निकलती है, सार वस्तु कुछ भी नहीं निकलती उसी प्रकार कुसंस्कारी मनुष्य चाहे संसार की समस्त विद्याएँ सीख जाय, वैज्ञानिक बनकर नित्य नए नए

आविष्कार करने लग जाय और अपने आप को संस्कृति का भारी विद्वान घोषित करने लग जाये फिर भी वह अपने जन्म सिद्ध कुसंस्कारों को कभी नहीं छोड़ता एवं अपनी मानसिक मलीन वासनाओं को उगले बिना कभी नहीं रह सकता। इसी प्रकार सुसंस्कारी लाखों आपत्ति आ पड़ने पर भी अपने भले संस्कारों को भी कभी नहीं छोड़ता। सच तो यह है कि संस्कारों का प्रभाव मनुष्य पर नहीं पड़ता तो संसार में असभ्यता ढूंढी नहीं मिलती।

मनुष्य ही नहीं संसार में प्राणी मात्र को सत्ता प्राप्त करने का लोभ है। सत्ता में भी संस्कारों का आविर्भाव है। कुछ लोग सुसंस्कारों के बल पर कुछ सत्ता (अधिकार) पाकर स्व पर का उपकार करते हैं और कुछ लोग कुसंस्कारों के कारण प्राप्त सत्ता का दुरुपयोग करते हैं। छोटे प्राणियों से लेकर बड़े पुरुषों तक सत्ताधीश बनने के लिए अपने प्रिय प्राणों को भी बलि देने में तनिक भी संकोच नहीं करते और सत्ता प्राप्त करने में वास्तविक ध्येय की पूर्ति समझते हैं। सत्ता लेना कोई बुरा नहीं है, इसलिए कि जब तक सत्ता को लेने वाला कोई उसका स्वामी नहीं होगा तब तक वह वैश्या के समान इधर उधर भटक भटक कर चारित्र को भ्रष्ट कर देगी। अत:सत्ताधीश होना अनुचित नहीं है, परन्तु इसके अभिलाषी व्यक्ति को सर्व प्रथम आत्मनिरीक्षण द्वारा यह निश्चय कर लेना चाहिए कि वह इस योग्य है या नहीं? जिस सत्ता को वह अपने हाथ में ले रहा है उसे वह सफलता पूर्वक सँभाल सकेगा या नहीं? अगर वह अपने आप को सत्ता के योग्य समझता है तो उसे सत्ता लेने में कोइ आपत्ति नहीं है, अन्यथा सत्ता की अभिलाषा रखना व्यर्थ है-। गुणों के द्वारा ग्रहण की गई सत्ता ही सफलता प्रदान करती है, गुण विहीन सत्ता तो [illegible] है।

अक्रोध, लोभहीनता, कार्यदक्षता, दुराग्रहहीनता, सरलता, अमत्सरता, निःस्वार्थता और सेवाभाविता आदि सद्गुणों का समावेश होना ही चाहिए। इन गुणों के बिना मनुष्य अपनी प्राप्त सत्ता को उपयोगी नहीं बना सकता और न उसमें किसी प्रकार की सफलता प्राप्त कर सकता है। अतएव सत्ताधारियों को अपनी आँखे स्थूल एवं सूक्ष्म विषयों के सत्य निरीक्षण में, अपने हृदय को कोमल, सच्ची सहानुभूति और सत्य को अपनाने में, अपनी मन शक्ति को प्रत्येक बात का यथावत् स्मरण रखने में अपने कानों को श्रेष्ठ एवं कल्याण कारिणी नीति पूर्ण बातों को सुनने में, अपने हाथों को सुपात्र दान में और शरीर को हीन, दीन, दुःखी प्राणियों की सेवा एवं सदाचरण करने में प्रयुक्त करना चाहिये। यही सत्ताधारियों की सत्ता का प्रशस्य सदुपयोग है और दृढ निश्चय ही जीवन-का सफल सदुद्देश्य है जो मनुष्य दृढ़ निश्चय से गिर जाया करते हैं, उन्हें मनुष्य कहना अनुचित है इसलिए कि दृढ-निश्चय ही मनुष्यता की सच्ची परख है। मनुष्य को समझना चाहिए कि आयुष्य अत्यन्त स्वल्प है और करने योग्य कार्य असंख्य हैं। अतः दृढ़ निश्चय के साथ अपने जीवन को सुसंस्कारवान् बनाना चाहिये।

प्रत्येक सत्ताधारी व्यक्ति को गुणवान होने के साथ साथ दृढ-निश्चय, संयम, सदाचार आदि मनुष्यों की चमकाने वाली विशेष प्रतिभाओं से सम्पन्न होना चाहिये तभी उसकी प्राप्त हुई सत्ता में उसको सफलता मिल सकेगी। जिस व्यक्ति में सदाचार नहीं, स्वार्थहीनता नहीं, सत्यता और उदारता नहीं उसको मिली हुई सत्ता बेकार समझना चाहिये।

एक दृष्टि : समाचार पत्रों पर

* बरेली की कॉन्वेन्ट संस्कृति के विद्यालय सेंट जोसफ स्कूल में पहले दर्जे की छात्रा को 'गुड मॉर्निंग' कहने पर बजाय 'नमस्ते' कहने से लहु—लूहान कर दिया। (जनसत्ता)

शिक्षा के नाम पर सेवा का दिखावा करनेवाली विदेशी मिशनरियाँ किस प्रकार हमारे संस्कारों में जहर घोल रही है, उसका यह छोटा सा उदाहरण है। लेकिन हम अपने झूठे अहं पोषण से बाज न आकर अपने बच्चों को कॉन्वेन्ट स्कूलों में भेजते ही जा रहे हैं।

* भारत से चोरी गई पत्तुर नटराज की मुर्ति को सरकार वापस मंगा रही है। मूर्ति अब तक नहीं आई, किन्तु उस पर तीन करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। (जनसत्ता १६—४—९२)

कौन पूछने वाला है, जनता के इन पैसों का हिसाब? अधिकतर राशि तो इस बहाने जांच अधिकारियों, पुरातत्व विशेषज्ञों, वकीलों आदि के अमेरीका और ब्रिटेन आदि जगहों की हवाई—यात्राओं पर खर्च हो गयी है। मूर्तियाँ तो अभी आना शेष है।

* गढवाल क्षेत्र के नौडियाल गांव में एक व्यक्ति की हत्या के संबंध में राजस्व पुलिस ने चार अभियुक्तों से यातनाओं के बल पर हत्या करना स्वीकार करा कर, केस को पक्का करने के लिए मृतक के खून से सने कपड़े, खून लगे पत्थर व अधजली लकडियाँ सबूत के तौर पर जुटा भी लिए। अभियुक्तों की जमानत पर रिहाई के बाद गांववालों ने मिलकर समानानंतर खोजी अभियान शुरू किया। जब सरकारी खोजी दल सबूत एकत्रित कर अभियुक्तों को जेल भेजने पर आमदा थे, तभी ग्रामीणों ने 'मृतक' को देवप्रयाग के एक मंदिर में से जीवित खोज निकाला। (जनसत्ता १६—४—९२)

कहानियाँ गढने में हमारे पहरूए कितने माहिर हैं? अगर अपराधिक घटना के सबूत छिपाना कानूनन जुर्म है, तो झूठी हत्या सिद्ध करना और झूठे सबूत जुटाना जुर्म नहीं हैं क्या? पुलिस की ऐसी गैर कानूनी हरकतें संविधान को ही नहीं वरन् विस्तृत अर्थ में समूची लोकतांत्रिक व्यवस्था को भी एक गंभीर चुनौती नहीं है? संविधान लागू होने के ४२ साल बाद भी संविधान पर मंडराता यह खतरा अंततः लोकतंत्र पर ही खतरा है।

* गुजरात के आणंद तहसील के सारसा गांव में पटेल मगनभाई के गन्ने के खेत में छः बच्चों को जन्म देकर एक लोमड़ी अज्ञात कारण से मर गयी। इधर भूख से एक बच्चे ने दम तोड़ दिया एवं शेष पांच बच्चों को भी भूख से छटपटाते देखकर खेत में काम करनेवाले कुटुम्ब की पांच बहनों ने उन पांच बच्चों को अपने स्तन से दूध पिलाकर उन्हें जिन्दा रखकर मातृत्व भावना का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। (गुजरात समाचार (बम्बई संस्करण) दि. १४—४—९२)

उपरोक्त समाचारों के साथ उनके फोटो भी प्रकाशित हुए हैं। आज की कही जानेवाली शिक्षित ? बहनें अपनी सन्तानों को भी दूध नही पिलाती वहाँ निरक्षर कही जानेवाली बहनों ने प्राणियों के बच्चों को स्तनपान कराकर उन्हें जीवित दान दिया, कितनी करूणा, दया व संवेदना होगी, उनके हृदय में। हमारी भारतीय संस्कृति आज भी गांवो में जीवित है। इस घटना ने एक प्रश्न चिन्ह खड़ा किया है कि शिक्षित किसे कहें ? आधुनिक बहनों को या इन बहनों को ?

– 'चकोरदृष्टि'

– शाश्वत धर्म को भेंट –

पू. आचार्य राष्ट्रसंत श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा से अहमदाबाद में सम्पन्न चातुर्मास २०४८ में हुई विविध तपश्चर्याओं के निमित्त सप्रेम भेंट

८०१/– धरूकालीदास खेंगारभाई (विक्रम टेरीन सेन्टर)
८०१/– वोहरा कालीदास त्रीकमभाई (आर. के. टेक्सटाईल्स)
५०१/– अदाणी छोटालाल वीरचंदभाई
२५५/– वोहरा कालीदास त्रीकमभाई (विक्रमकुमार बाबुलाल)
२५१/– चुन्नीलाल डूंगरसीभाई बोहरा (अमीन एन्टर प्राईजेस)
२५१/– दोषी मोहनलाल हंसराजजी (रिलेशन)
२५१/– वोहरा पुनमचंद परषोत्तमदास
२५१/– बलु डायालाल वीरचंद (चंदुलाल डायालाल)
२५१/– मोदी डायालाल लल्लुभाई
२५१/– दोषी उत्तमचंद सगथाचंद (विनोदभाई बबलदास दोषी
२०१/– अदाणी शामजीभाई खेतसीभाई (जय जलाराम)
२०१/– संघवी लल्लुभाई पीताम्बरदास
२०१/– देसाई चमनलाल त्रीभोवनदास (सी. टी. टेक्सटाईल्स)
२०१/– देसाई दलसुखभाई उजमसीभाई (सरिता)
२०१/– शाह राजमल डूंगरसीभाई
२०१/– पारेख गगलदास उमेदचंद (न्यू लीला ट्रेडर्स)
२००/– देसाई हीम्मतलाल ईश्वरलाल (अदाणी ॲण्ड कं.)
१५१/– दोशी राजमल रीखबचंदभाई
१००/– शा. श्री हरकचंदजी भबूतमलजी जैन नैल्लोर
१००/– पारानिवासी स्व. श्री पन्नालालजी डूंगलवाल की धर्मपत्नी श्रीमती श्रृंगारबाई का श्री सिद्धाचल तीर्थ स्थान पर नवाणु यात्रा सम्पूर्ण कर उनका स्वर्गवास हो गया। इस स्मृति को शाश्वत बनाए रखने के लिये उनके पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार, नरेंद्र कुमार जितेन्द्र कुमार की ओर से।
१०१/– पांथेड़ी निवासी शा. तेजराजजी बदाजी एन्ड कम्पनी बम्बई (ताराचंदजी छाजेड़ की ओर से पू. साध्वी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से।

समाचार दर्शन

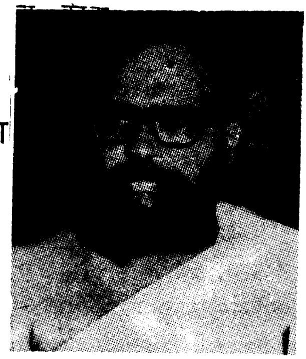

आचार्यश्री मधुकरजी का चातुर्मास सूरत में होगा
नव्वाणुं यात्रा सानंद सम्पन्न
अक्षयतृतीया पर पंचान्हिका महोत्सव
व १०८ छोड़ का उद्यापन

श्री सिद्धाचलजी महातीर्थ – प. पू. आचार्यदेव राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' की पावन निश्रा में सिद्धगिरिराज की शीतल छाया में ६०० आराधकों ने नवाणु यात्रा सानंद सम्पन्न की। तीर्थमाल का कार्यक्रम यतीन्द्र भवन धर्मशाला में २३ एप्रिल को आयोजित किया गया था। पूर्व संध्या को यात्रा के आयोजक थराद निवासी अदाणी कुंवरजीभाई देवराजभाई परिवार का स्वागत अभिनन्दन पत्र, शाल, रजतमुद्रा, पावापुरी जल मन्दिर, पूजा का सामान आदि यात्रिकों का द्वारा भेंट कर किया गया। यतीन्द्र भवन ट्रस्ट द्वारा एवं अन्य संस्थाओं व महानुभावों द्वारा भी स्वागत किया गया।

पूज्य आचार्यदेव के चातुर्मास हेतु इस वर्ष बम्बई, सूरत, बीजापूर, भिवंडी आदि नगरों से समय–समय पर आग्रहभरी विनंतीयाँ की गयी थी, किन्तु देश–काल भाव को देखते हुए इस वर्ष का चातुर्मास सूरत में करने की स्वीकृति प्रदान करते ही सूरत श्री संघ के भाई–बहन खुशी से झूम उठे। स्मरण रहे त्रिस्तुतिक परंपरा में दादा गुरूदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी के सूरत में अविस्मरणीय चातुर्मास के बाद उनकी पाट–परम्परा के आचार्य का यह प्रथम चातुर्मास होने जा रहा है।

गुरूणीजी हेतश्रीजी की सुशिष्या साध्वीजी शशिकलाश्रीजी म. सा. के वर्षीतप पुर्णाहुति निमित्त १०८ छोड़ का उद्यापन तथा जिनेन्द्र भक्तिस्वरूप पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन ३० एप्रिल चैत्र वदी १३ से किया गया है। वैसाख सुदी २ को भक्तामर पूजन रखा गया है। कार्यक्रम का आयोजन धरू कालीदास खेंगारभाई परिवार थराद निवासी द्वारा किया गया है।

सूरत व नडियाद में ज्ञान मन्दिर का उद्घाटन

प. पू. जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा से निर्मित सूरत एवं नडियाद में श्रीमद् राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर का उद्घाटन आपकी ही मंगल निश्रा में क्रमशः जेठ वदी २ बुधवार दि. १७–६–९२ व वैसाख वदी ११ गुरूवार दि. २८–५–९२ को शुभ मुहूर्त में सम्पन्न होगा।

श्री आहोर जैन संघ द्वारा समाज सुधार की ओर सराहनीय कदम

आहोर : प्राप्त समाचारों के अनुसार श्री आहोर जैन संघ द्वारा समय के अनुरूप समाज सुधार की ओर बहुत ही प्रशंसनीय कदम उठाया गया है। वैसाख सुदी २ व ३ को ज्यादा शादियाँ होने के कारण खाद्यान्न वस्तुओं एवं अन्य चीजों की कृत्रिम कमी बता कर लोग मनमाना पैसा वसूल करने लगे थे। दुध की बुकिंग ३० और ३५ रूपये लीटर तक में होने लगी थी। सारी स्थितियों का जायजा लेकर प्रबुद्ध लोगों ने विचार विमर्श कर गांव में सभी की ओर से एक ही जगह सामुहिक भोजन करने का निर्णय लेकर सारी समस्याओं का समाधान कर दिया। सर्वत्र इस कदम की सराहना की जा रही है।

विस्तृत समाचार प्राप्त होने पर अगले अंक में दिये जायेंगे।

धाणसा में ज्ञानशिविर का आयोजन

धाणसा : मुनिराज श्री जयानंदविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में बालकों व युवाओं में धार्मिक संस्कारों को सुदृढ़ करने के लिये ३ जून से २३ जून तक २० दिवसीय ज्ञान शिविर का आयोजन संघवी कांतिलालजी चुन्नीलालजी परिवार के सहयोग से किया जाएगा।

भाग लेने के इच्छुक जैन संघ धाणसा जिला जालोर से सम्पर्क करें।

कैलेंडर – १९९२					जन. अप्रैल जुलाई	अक्टू.	मई	फर. अग.	मार्च नवं	जून	सितं दिसं.
१	८	१५	२२	२९	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
२	९	१६	२३	३०	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध
३	१०	१७	२४	३१	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू
४	११	१८	२५		शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र
५	१२	१९	२६		रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
६	१३	२०	२७		सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
७	१४	२१	२८		मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम

संकलन – प्रितेश उत्सवलाल जैन – इन्दौर (म.प्र)

शोक–श्रद्धांजली

श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मं...
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

एक मंगल मृत्यु

पालीतणा : सिद्धाचलजी महातीर्थ पर तपस्वी, श्रीमती श्रृंगारबाई धर्मपत्नि स्व. श्री पन्नालालजी डूंगरवाल पारा ने पुज्य गुरूदेव जयंतसेनसूरिजी म. सा. की सानिध्यता में वैशाख वदी ३ को अपनी नवाणु यात्रा सम्पूर्ण की ओर उसी के साथ अपनी जीवन यात्रा भी सम्पूर्ण की।

ऐसी दशा हो भगवन जब प्राण तन से निकले।
गिरिराज की हो छाया, मन में ही ये भाया गिरिराज निकट हो।
गुरूराज मेरे निकट हो जब प्राण तन से निकले।

इस प्रकार की शुद्ध भावना में जब नवाणु यात्री श्रृंगारबाई के प्राण तन से निकल रहे थे तब वे पचक्खाण में थीं। प्रातः सिद्धाचलजी (दादा के दरबार की) की दो यात्रा कर अपनी नवाणु यात्रा पुरी की सायंकाल स्वास्थ्य की परेशानी हुई तब पुज्य गुरूदेव जयंतसेनसूरिजी म. सा. ने मांगलिक सुनाई, वासक्षेप व आर्शिवाद दिया अपने परिवार से दूर (अंतिम समय पास में) उनके पास पुत्र, पुत्री और जमाई थे। नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करते हुए (पढमं हवाई मगलम्) अपने नश्वर देह का परित्याग किया।

एक विचित्र संयोग आपके पतिदेव श्री पन्नालालजी का देहावसान भी तीज के दिन हुआ। आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक क्रिया में रत है। आपने अपने जीवन में वर्धमानतप ओली, वरसीतप नवकार आराधना, उपधान, नवाणु यात्रा आदि की। आपके अनेक वर्षों से रात्री भोजन, कच्चे पानी, का त्याग था। पिछले दो वर्षों से आप बियासणा करती थी। आपके पुत्र नरेन्द्र डूँगरवाल स्थानीय परिषद शाखा पारा में उपाध्यक्ष पद पर है तथा कई वर्षों से श्वे. पेढी के व्यवस्थापक है तथा छोटे पुत्र जितेन्द्र कुमार जैन शाश्वत धर्म में पूर्व सचिव का कार्य कर चुके हैं तथा परिषद के सक्रिय सदस्य है। पू. गुरूदेव ने उनके शोक सन्तृप्त परिवार को सांत्वना देते हुए कहा कि ऐसे विचित्र योग विरले प्राणी को मिलते हैं। श्रृंगारबाई की आत्मा महान आत्मा थी। हमे उस आत्मा के प्रति शोक न मनाते हुए मंगल कामना करते रहना चाहिये।

★ लाखणी – धर्मप्रेमी, सेवाभावी, शाह चमनलाल नागरदास का स्वर्गवास ६८ वर्ष की उम्र में २२ मार्च ९२ को नवकारमंत्र का स्मरण करते करते हुआ।

शाश्वत धर्म व परिपद परिवार की ओर से स्वर्गस्थ आत्माओं को भावभरी श्रद्धांजली।

शब्दसागर इनामी स्पर्धा ८ के परिणाम एवं उत्तर

परिणाम – निम्नांकित प्रतियोगी इस स्पर्धा में सफल रहे –
(१) कु. बीना जैन – भरतपुर (स. क्रं. ई–१४४२) (२) पू. साध्वीजी श्रीकल्परेखाश्रीजी म. सा. (३) श्री सुमेरमल गोलेच्छा – मदुराई (स. क्रं. सी–५४८) (४) शा. मणिलाल नाथूलालजी बाग (स. क्रं. १२७२) (५) आशिष संघवी – बाग (सी–११०२) (६) कपिल पौसित्रा – बाग (जी–२०४) (७) श्री बसंतीलालजी जैन – पूना (सी–१०१४) (८) कु. अनिता जैन – मदुराई (सी–)

सभी उतीर्ण प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप ५००/– रूपये की राशि का समानभाग ५००/८ = ६०/– रूपये का साहित्य भेज दिया गया है।

इनका प्रयास भी सराहनीय रहा – संगीता जे. संघवी (आहोर), विजय एफ. मोदी (गांधीधाम), नितीन बोहरा (पालीतणा), भरतकुमार जैन (हरजी), धर्मचंद मेहता (झाबुआ), चंदा अशोक कुमार जैन (पेण), मनोजकुमार (रखीयाल), सौ. चन्दा किरण कुमार (कल्याण), अनिल धारीवाल (जावरा), कु. श्वेता शहा (थाने), कु. संगीता छाजेड़ (पारा), आजादकुमार जैन (अलीराजपुर), प्रकाश जैन (राजमहेंद्री), किरण (रानापुर), मंजुकुमारी (मदुराई), रमणीक मेहता (जावरा) कु. मुन्नी लुकड़ – मदुराई।

परिणाम – बाऐं से दाऐं :– (१) सुधर्मा (३) अरति (५) सारस (७) डाका (९) धर्म (१०) जलज (११) क्षमा (१२) जनक राजा (१५) ध्वजा (१७) सत (१८) रई (१९) लवण (२१) जलोदर (२३) यति (२४) वीर (२६) रंग (२७) वन्दन (२९) आदर (३१) चर्या (३२) मद (३३) नींदनीय (३४) मालव (३८) टट्टी (३९) आया (४०) मनक (४२) वर (४३) रामा (४४) पाया (४५) विवेक (४७) मजा (४९) खटमल (५१) नारद (५२) कलावती (५५) रटन (५६) शहनाई (५८) रास (५९) रंभा (६१) पावा (६२) क्षुल्लक (६५) गारव (६६) कंपन (६८) माला (६९) जीती (७०) सड़ (७१) जयन्तसेन (७२) काला

उपरसे नीचे की ओर – (१) सुध (२) धर्म ध्वज (३) अलसर (४) रजत (५) सामाइय (६) सजल (७) डाकण (८) कारा (११) क्षर (१३) नवपद (१४) जालोर (१६) जालोर (२१) दगमट्टी (२२) वंदनीया (२४) गोचरी (२८) नंद (३०) रमा (३४) यमक (३६) लव (३७) वरण (३८) टमाटर (३९) आया (४१) कमला (४३) राख (४४) पालन (४५) विरह (४६) वेदना (४८) जावरा (५०) मटर (५१) नाशवान (५३) तीस (५४) तारंगाजी (५७) इक्षु (६०) भारती (६१) पापड़ (६३) कमान (६४) कपिला (६६) कंस (६७) जय।

परिषद के प्रांगण से

पारा में एक दिवसीय शाखा परिषद सम्मेलन

पू. आचार्य राष्ट्रसंत श्री जयंतसेनसूरिजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वीजी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी की शिष्या साध्वीश्री अनन्तगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में शाखा परिषद पारा का एक दिवसीय सम्मेलन रखा गया । जिसका उद्घाटन ध्वज फहरा कर एवं गुरुदेव श्री के फोटो पर मालार्पण के साथ हुआ । दिन भर विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ शाखा परिषद के पदाधिकारियों का चयन सर्वानुमत से किया जाकर सर्व श्री राजेन्द्र कोठारी अध्यक्ष, श्री राकेश पगारिया मंत्री, श्री रविन्द्र तलेसरा प्रचार मंत्री निर्वाचित किये गए । महिला परिषद में अध्यक्षा - श्रीमती महेन्द्रप्रभा छाजेड़, मंत्री-कु. मनीषा कोठारी एवं प्रचार मंत्री कु. नितीशा छाजेड़ निर्वाचित की गई ।

कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक छाजेड़ द्वारा किया गया । परिषद की वर्ष १९९१-९२ की वार्षिक रिपोर्ट पूर्व मंत्री श्री दिलीप कोठारी द्वारा पढ़ी गई । सम्मेलन में जीवदया हेतु करीब १२०० किलो गेहूं एकत्रित किया गया ।सम्मेलन का समापन स्वामी वात्सल्य के साथ किया गया ।

प्रिय पाठक गण अपनी राय भेजें

'शाश्वत धर्म की साज-सज्जा, मुद्रण आदि को सुंदर बनाने के साथ ही पाठकों की विविध श्रेणी के अनुरुप ज्ञानवर्धक सामग्री देने का भी हमारा निरन्तर प्रयत्न रहा है । इसी क्रम में पिछले अंको से एवं इस अंक से विविध विषयों को लेकर कुछ 'स्थायी-स्तंभ' प्रारंभ किये जा रहे हैं । जिनमें 'एक दृष्टि-समाचार पत्रों पर, सरे-राह चलते-चलते, क्या आप जानते हैं ?, रुकिये-पढिये-सोचिये, काव्य-सुधा, ज्ञान-कसौटी, शब्दसागर इनामी स्पर्धा, स्वास्थ्य-चर्चा, इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ आदि हैं । इनके साथ अपनी बात, समाचार दर्शन एवं आचार्यश्री व विद्वानों के विविध विषयों पर हमेशा की तरह सामग्री रहती है ।

कृपया इन स्तंभो के विषय में अपनी राय अवश्य भिजवायें । आपके अमूल्य सुझावों से 'शाश्वत धर्म' को ज्यादा उपयोगी बनाने में सहयोग मिलेगा ।

● सम्पादक ●

बिन्दु में सिन्धु

- ★ निरोगता देने वाले तीन है............................स्वच्छता ■ व्यायाम ■ तप
- ★ तीन को त्याग करने की भावना रखो ! ....काम ■ क्रोध ■ लोभ

घुपते घुपते....

☆ थाने- मानपाडा में निर्माणाधीन मंदिर हेतु भगवान श्री शांतिनाथ आदि जिनबिम्बों एवं गणधर गौतमस्वामीजी आदि गुरु प्रतिमाओं का मंगल प्रवेश वैसाख सुदि ५ दि. ७/५/९२ को होगा।

☆ साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी, डा० प्रियदर्शनाश्रीजी, डा० सुदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा का चातुर्मास थराद (उ. गुजरात) में तय हुआ है।

पाठकों के विचार.................. मत-सम्मत

- .....शाश्वत धर्म का अंक मिला। पढ़कर आत्मिक संतोष हुआ। प्रकाशित सारी सामग्री आत्मोत्थान के लक्ष्य को लेकर है। हिन्दी व गुजराती दोनों भाषाओं व लिपि की लगभग साम्यता के कारण किसी भी उत्तरी भाषा में जानने वाले के लिए बोध गम्य है। आपको साधुवाद। **रिखबचंद कर्नावट – जोधपुर**

- .....शाश्वत धर्म में अंग्रेजी पूर्ति के लिये धन्यवाद। विदेशों में कई जैन हैं जो 'जैनिज्म' के बारे में जानना चाहते हैं लेकिन उनकी सबसे बड़ी बाधा भाषा की होती है और मैं चाहता हूँ कि शाश्वत धर्म विदेशी जैनों के लिए उपयोगी हो। **सन्जय बाफना – भीनमाल (राज.)**

- .....आप शाश्वत धर्म को सुरुचिपूर्ण पत्रिकाओं की श्रेणी में रुपान्तरित करने में सफल हुए हैं गुरुदेव श्री की परम्परा इस श्रम का सही मूल्यांकन करें और जन–जन में गुरु आस्था और मानवीय गुणों का विकास एवं विस्तार करने में शाश्वत धर्म निरंतर प्रवृत्तमान हो यही शुभेच्छा। **शा. इन्दरमल बागरा (राज.)**

- .....बहुतसी पत्रिकाएं आती हैं, नजर से निकालते हैं पर कुछ पत्रिकाएं मन को खींच लेती हैं। ऐसी पत्रिकाओं में 'शाश्वत धर्म' का स्थान अग्रीम है। बहुत सी जनसाधारणोपयोगी तथा विशेष विद्वानों को उपयोगी लेखन सामग्री मिल पाती है। उदगम स्थान तो किसी का भी छोटा ही होता है पर त्याग एवं उद्देश्य में जो अपेक्षित महानता होने के लिए भी काफी जागरूकता सम्पादक गण की है। आशा है जैन शासन का महनीय ऐक्य नारा 'जैन जयति शासनम्' इनको आप दृढ़ता से प्रभावित करने में सफल रहेंगे। **आचार्य राजयशसूरि**

- .....शाश्वत धर्म बहुत ही महत्व पूर्ण पत्रिका है। इसमें सारगर्भित विद्वानों की रचनाएं समयारसार, पुस्तक स्वीकार अति प्रशंसनीय है। हमारी हार्दिक मंगल कामनाएं है कि पत्रिका शाश्वत धर्म दिन दुगना रात चौगुना प्रगति करे।
मुनि श्री रामदास–अम्बालाशहर (हरियाणा)

पांथेडी नगर में साध्वीजी त्रय की निश्रा में
ओलीजी आराधना सानन्द सम्पन्न

पाथेड़ी (राज.) नगर में प. पू. तीर्थप्रभावक, साहित्य मनीषी वर्तमान आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.की शुभाज्ञानुवर्तिनी प. पूज्या वयोवृद्धा साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म.सा. डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. एवं डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. की सुप्रेरणा एवं उन्हीं की पावन निश्रा में पाथेड़ी श्रीसंघ द्वारा शाश्वती चैत्री श्री नवपद ओलीजी आराधना निमित्त श्री सिद्धचक्र महापूजन सह नवाह्निका महोत्सव आयोजित किया गया था, जो सानन्द सोल्लास निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

नव दिन पूजा, आराधकों का पारणा, प्रभावना एवं ओलीजी आराधना आदि की सुन्दर व्यवस्था पाथेड़ी श्रीसंघ द्वारा की गई थी।

श्री सिद्धचक्र महापूजन का भव्य आयोजन पाथेडी निवासी शा. जेठमल बदाजी हुकमाणी परिवार के घर पर किया गया। विधि विधान हेतु सायला निवासी श्री हेमराजजी गुरोसा पधारे थे। इस अवसर पर भीनमाल से संगीतकार भंवर चौधरी एवं भीनमाल श्रीसंघ, तखतगढ़, धाणसा, धूमडिया आदि जगह से महानुभावों ने पधार कर जिनशासन की शोभा बढ़ाई। महापूजन की समाप्ति पर सभी को श्रीफल की प्रभावना दी गई।

आपका पत्र मिला

⁕ 'शाश्वत धर्म' निरन्तर नित नवे कलेवर पठनीय और ज्ञानवर्धक सामग्री से जो स्थान बना रहा है इसके लिये 'शाश्वत धर्म' परिवार को अनेकशः साधुवाद

—जगदीप हर्षदर्शी, उदयपुर

⁕ मार्च ९२ का अंक प्राप्त हुआ। आवरण पृष्ठ पर अरिहंत परमात्माकी चार उपमाएं चित्र एवं अंदर के पृष्ठों पर उक्त चित्रकथा का राष्ट्र संत आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी के शब्दों द्वारा सुन्दर चित्रण बहुत ही रोचक एवं ज्ञान वर्धक लगा। शाश्वत धर्म का इस प्रकार नवीनता से प्रस्तुतीकारण करने के लिये बहुत-बहुत हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

—रमणीक मेहता-जावरा

⁕ फरवरी अंक मिला। बहुत अच्छा छपा है, अक्षर भी बहुत अच्छे एवं ज्ञान की बातें भी हमको बहुत बढ़िया लगी। गुरुदेव के आहार की मर्यादा व आहार शुद्धिका ध्यान दोनों व्यक्ति के जीवन निर्माण में सहायक सिद्ध होती है एवं होगी। रहो अचल आबाद गुरुवरगादी भी अच्छी है। गीत जय बोलो भी अच्छा है। धन्यवाद।

— शांतीलाल भटवेरा (ढोढर-रतलाम)

स्व. समीरमलजी की स्मृति में म. प्र. शासन द्वारा समीर सागर सिंचाई परियोजना घोषित

टांडा- सुप्रसिद्ध समाजसेवी, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के समर्पित स्व. श्री समीरमलजी जैन की स्मृति में उनके नाम पर म.प्र. के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री सुंदरलालजी पटवा ने २५६ लाख की **'समीर सागर सिंचाई परियोजना'** की घोषणा ४-४-९२ को धार जिले में की है।

इससे समाज व परिषद में हर्ष व्याप्त है। समस्त शाखा परिषदों ने मुख्यमंत्रीजी को आभार प्रदर्शित किया है।

हैदराबाद में महावीर जयन्ति शोभायात्रा पर पुलिस द्वारा अत्याचार आंध्रप्रदेश सरकार निष्पक्ष जांच कर दोषियों को दंड दे

हैदराबाद :- प्राप्त समाचारों के अनुसार जैन समाज के सभी सम्प्रदायों द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक उत्सव निमित्त १५ अप्रेल को भव्य शोभायात्रा आयोजित की गयी थी, जो दिगम्बर जैन मंदिर, बेगम बाजार, फिलखाना होती हुयी निजाम कोलेज मैदान में सार्वजनिक सभा में विसर्जित होकर माननीय न्यायमूर्ति श्री. यु. एन. बछावत सम्बोधित करने वाले थे। करीबन छःहजार स्त्री-पुरुषों के साथ शोभा यात्रा गांधीभवन होकर शांति पूर्ण तरीके से गुजर रही थी कि अचानक कुछ पुलिसों द्वारा रुट को लेकर विवाद हुआ। जिससे शोभा यात्रा वहीं रोक दी गयी। चन्द मिनीटों में ही शोभायात्रा अपनी मंजिल पर पहुंचने वाली थी कि इधर विवाद ने दूसरा ही रंग ले लिया। अचानक पुलिस इन्स्पेक्टर श्री बाळकृष्ण ने बिना किसी चेतावनी के गोली चलाना शुरु कर दिया। जिसमें प्रमुख कार्यकर्ता श्री रतनलालजी जैन, श्री कमल कामदार आदि लगभग १०० व्यक्ति घायल हो गए। फिर लाठी चार्ज भी किया गया। कुछ पुलीसकर्मी बिना गणवेश भी आकर हमले में शामिल हो गए। इसी तहत १६ एप्रिल को रात्रि में घरों में जाकर बीस जैन युवकों को झुठे आरोप लगाकर गिरफ्तार किया गया। इस प्रकार की अत्याचारपूर्ण कार्यवाही से शान्तिप्रिय जन मानस को गहरा दुःख पहुंचा है। सभी न्याय व अहिंसाप्रेमी संस्थाओं को प्रधानमंत्रीजी, गृहमंत्रीजी-भारत सरकार व मुख्यमंत्रीजी, गृहमंत्रीजी-आंध्रप्रदेश राज्य सरकार को पत्र लिखकर निष्पक्ष न्याय की मांग व दोषी व्यक्तियों को दंडित करने की मांग करनी चाहिये।

उपरोक्त अत्याचार के विरोध में १६ एप्रिल को बंद रखा गया।

(अभी प्राप्त समाचारों के अनुसार केन्द्रीय गृहमंत्री श्री चव्हाण ने राज्य सरकार की ओर से निवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में जांच समिति गठित कर जांच का आदेश दे दिया है)

(दि. २९.४.९२ ● सम्पादक)

समाचार सार

★ **मीरा रोड़** :- शांतिनगर में आचार्यश्री यशोवर्मसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में अक्षय तृतीया को वरसीतप के पारणे व वैसाख सुदि ५ को निर्माणाधीन जिनालय का खातमुहूर्त व शिलान्यास महोत्सव सह सम्पन्न हुआ ।

★ **श्री बामणवाडजी तीर्थ** :- आचार्यश्री गुणरत्नसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में आठवीं से कॉलेज तक के युवाओं की आध्यात्मिक शिबिर २७ मई से ७ जून तक आयोजित की गयी है । प्रवेश के इच्छुक - जैन पेढी, पिण्डवाडा, स्टेशन-सिरोही रोड (राजस्थान) पिन-३०७०२१ से सम्पर्क करें ।

★ **हुबली** :- भगवान महावीर जन्म कल्याणक निमित्त हुबली जैन महासभा के उपक्रम से चारों सम्प्रदायों ने मिलकर शोभायात्रा आयोजित की । समापन पर गणिवर्य श्री अरुणविजयजी म.सा. का प्रवचन हुआ । आपकी ही निश्रा में राजस्थान युथ फेडरेशन द्वारा पांच विकलांग महिलाओं को सिलाई-मशीन वितरीत की गयी । संस्था द्वारा अब तक ४१२ अपंगों को जयपुर कृतक पांव वितरित किये जा चुके हैं ।

★ **लोणावला** :- लोणावला जैन युवक संघटना के उपक्रम से भगवान महावीर जन्म कल्याणक निमित्त प्रातः आठ बजे शानदार शोभायात्रा आयोजित की गयी । दोपहर धर्मसभा को आचार्यश्री विचक्षणसूरिजी, महासती अनिताकुंवरजी आदि ने भगवान महावीर जीवन के विविध पहलूओं पर प्रकाश डाला । संघटना द्वारा लोणावला ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिबिर भी आयोजित की गयी । साने गुरुजी अनाथाश्रम में विद्यार्थियों को चादरें, बर्तन खेलकूद के सामान व एजन ब्लाइंड होम में फल वितरित किये गये । रंगोली स्पर्धा आयोजित की जाकर रात्रि में बालिका मंडल द्वारा भक्ति की गयी ।

★ **वलवण (लोनावला)**:- आचार्यश्री विचक्षणसूरिजी की निश्राा में शा. मांगीलालजी जवानमलजी परमार परिवार की ओर से आचार्य श्री रामचंद्रसूरिजी के समाधिपूर्वक स्वर्गवास निमित्त संयम जीवन अनुमोदनार्थ १०८ पार्श्वनाथ-वीश-स्थानक तथा लघु शान्ति स्नात्र सह अष्टान्हिका महोत्सव चैत्र सुदि १० से मनाया गया । वदि २ को स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया ।

★ **पुणे** :- शा नेनमलजी वगताजी फुलफगर परिवार (कोरटा निवासी) द्वारा पुणे से सिद्धाचलजी, लक्ष्मणीजी, मोहनखेडा, नागेश्वर आदि तीर्थों की यात्रा हेतु बस द्वारा प्रवास आयोजित किया गया । २३ एप्रिल को ७ बसों द्वारा रवाना होकर १ मई को पुनः आगमन हुआ ।

★ **छिन्दवाडा** :- पू. आचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी म.सा. के सानिध्य में भगवान महावीर जन्म कल्याणक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया । इस अवसर पर श्री चांदमलजी खातेगाँव द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'निश्चय नहीं निष्कर्ष कहो' का विमोचन किया गया ।

★ **गुन्टुर** :- भ. महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर श्री महावीर मेमोरीयल ट्रस्ट एवं श्री राजेन्द्रसूरि जैन सेवा समिती के संयुक्त तत्वावधान में श्री महावीर मेमोरीयल जुनियर कालेज में एक सभा का आयोजन

प्रमुख कवि श्री प्रसादराम कुलपति की अध्यक्षता एवं आयकर के डिप्टी कमिश्नर श्री व्हाय. रविन्द्रनाथ के मुख्य आतिंथ्य में किया गया। इस अवसर पर शाकाहार के क्षेत्र में प्रचार-प्रसार एवं पशु बली बंद करवाने वाले प्रमुख कार्यकर्ताओं का शाल, अभिनंदन-पत्र एवं रक्कम भेंट कर अभिनन्दन किया गया। विकलांग को तीन पहिया की रिक्षा एवं विकलांग बच्चों को नये वस्त्र वितरित किए गए। सभा में कवियो ने अपने गान माधुर्य एवं चतुरोक्तियों से अहिंसा की आवश्यकता पर जोर देते हुए लोगों का दिल जीत लिया।

शिर्डी :- भगवान आदिनाथ प्रभु की ५१ इंच की भव्य प्रतिमा आदि जिन बिम्बों की अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा कार्यक्रम दि. १० अप्रेल से २० अप्रेल तक आचार्य श्री भुवनभानुसूरिजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न हुआ।

★ **थाने :-** प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर सभी सम्प्रदायों द्वारा सामूहिक रथयात्रा का आयोजन स्थानीय थाने जैन मन्दिर से किया गया। रथयात्रा का शुभारम्भ स्थानीय श्री अभिनन्दन जैन मंडल द्वारा निर्मित देव विमान द्वारा पुष्प वर्षा के साथ हुआ। इस अवसर पर सम्पूर्ण जैन समाज ने अपने व्यवसाय बंद रखकर अपनी एकता परिचय दिया। समाज द्वारा जीवदया एवं शाकाहार प्रचार-प्रसार हेतू चार हजार पेम्पलेट छपवाकर वितरित किये गए। दिगम्बर जैन समाज के सौजन्य से सिव्हिल अस्पताल, अनाथाश्रम एवं मेंटल अस्पताल में बूंदी के पैकेट्स वितरित किए गए।

★ **हुबली :-** राजस्थान युथ फेडरेशन द्वारा महावीर जन्मोत्सव के उपलक्ष में अस्पतालों में रोगियों को फल वितरण व रक्तदान शिबिर का आयोजन किया गया।

★ **राजकोट:-** मुनिराज श्री रत्नसेनविजयजी की निश्रा में भगवान महावीर जन्म कल्याणक निमित्त प्रातः चैत्यपरिपाटी, सामूहिक चैत्यवंदन के बाद साधर्मिक भक्ति आयोजित की गयी। दोपहर जाहिर प्रवचन एवं निबन्ध स्पर्धा भी आयोजित की गयी। प्रति रविवार को विविध विषयों पर मुनिश्री का जाहिर प्रवचन होता है।

★ **चरली :-** शा. वालचंदजी धनाजी द्वारा चरली से सिद्धाचलजी, गिरनारजी, शंखेश्वरजी, नाकोडाजी आदि तीर्थों की यात्रा हेतु बस द्वारा वैशाख सुदि ५ को प्रस्थान होकर सुदि १४ को पुनः पधारेंगे। इस अवसर पर आयोजकों द्वारा भक्तामर पूजन, ५ छोड उद्यापन सह अष्टान्हिका महोत्सव रखा गया है।

★ **लाखणी :-** आदिनाथ जिनालय की १७ वीं वर्षगांठ निमित्त चैत्रसुदि ६ को आदिनाथ पंच कल्याणक पूजा पढायी गयी।

★ **भेंट प्राप्त करें :-** पुण्यानंद ज्योत, पुण्यानंद प्रकाश, पुण्यानंद प्रेरणा, पुण्यानंद जयणा, पुण्यानंद गीत गुंजन, पुण्यानंद सुवास, पुण्यानंद समाधि पुस्तकें पाठकों को आचार्यश्री वारिषेणसूरिजी की ८९ वीं ओली निमित्त निम्नांकित पते पर चार रुपये के डाक टिकीट भेजकर मंगवा सकते हैं – भुवन तिलक कृपा मंदिर, जैन ब्रदर्स, अंलकार सिनेमा के पास, जैन मंदिर विशाखापट्टनम् (आं.प्र.) पिन-५३० ००२

★ अलीराजपुर :- भगवान महावीर जन्मोत्सव निमित्त प्रातः शोभायात्रा, दोपहर में पूजा एवं रात्रि में भक्ति भावना की गयी।

★ इन्दौर :- स्थानीय शाखा परिषद की ओर से श्री राजेन्द्र जैन उपाश्रय जुनी कसेरा बाखल पर निःशुल्क चिकित्सा सुविधा का आयोजन प्रति रविवार (प्रातः १० से ११ बजे तक) को किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त जीवदया, पुष्पयोजना आदि का भी शुभारम्भ किया गया है।

★ इन्दौर :- श्री महावीर जन्म कल्याणक के पावन पर्व पर समग्र जैन समाज पूर्वी क्षेत्र की प्रभात फेरी तिलकेश्वर पार्श्वनाथ जैन तीर्थ से निकाली गई।

पू. मुनिश्री मुक्तिरत्नसागरजी की निश्रा में ओलीजी की आराधना प्रतिदिन व्याख्यान में नौ पदों की व्याख्या के साथ सम्पन्न हुई।

માતૃત્વ શક્તિ સમ્પન્ન નારી-કથા

સંયમધનની સુરક્ષા

પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

"નાની-મોટી શ્રીમંતાઈની અપેક્ષાએ સત્યપૂર્ણ ગરીબી લાખો વાર શ્રેષ્ઠ છે."

જીવનમાં યદિ સદાચારની મર્યાદાનું પાલન છે, તો ગરીબ પણ શ્રીમંત છે અને શ્રીમંતના રંગમહેલોમાં યદિ સદાચારનું પાલન નથી તો તેના જેવો ગરીબ બીજો કોઈ નથી.

કરસનકાકા ગરીબાઈમાં દુઃખી બન્યા હોય કે શ્રીમંતાઈમાં ગર્વિષ્ઠ થયા હોય તેવો અનુભવ કોઈને થયો નથી-કેમ કે તેઓ સદા પ્રસન્નચિત બનીને ગામમાં પધારતા મુનિરાજોની તથા સાધ્વીજી મહારાજોની યથાશક્તિ સેવા-ભક્તિ ઉપરાંત સમાજના નાના-મોટા કાર્યો કરવામાં હંમેશા મસ્ત રહેતા, પ્રતિ દિવસના સાંભળેલા વ્યાખ્યાનોની ચર્ચા પોતાના કુટુંબીઓને ખૂબ શ્રદ્ધાપૂર્વક કરતા અને કહેતા કે,- 'માનવને પ્રાપ્ત થયેલું સુખ તથા દુઃખ ભાડુતી હોવાથી તડકા પછી છાંયડો અને છાંયડા પછી તડકો અનુભવાય તેમાં હર્ષ-શોક કરવાનું કંઈ પણ કારણ નથી. સુખી થવાની ઈચ્છાવાળો માનવ પોતાની કમાણીથી થોડી કમાણીવાળાની ચિંતા કરે તો કોઈને પણ શોક-સંતાપ કરવાની આવશ્યકતા રહે નહિ. કેમ કે ભારતદેશના લાખો માણસોને ઓટલો નથી કે રોટલો નથી તથા જેઓ બહુ જ ટૂંકા પગારમાં પોતાનો જીવનનિર્વાહ કરતા હોય છે તેમને યદિ લુકી રોટલીથી ચાલી શકતું હોય તો મને પણ શા માટે ન ચાલે? સારાંશ કે કરસનકાકા સાવ ગરીબ ન હતા, પણ શ્રીમંતમાંથી ગરીબ બનેલા હોવાથી કોઈક સમયે પહેલાનો સમય કદાચ યાદ આવે તો તેઓ પોતાનું મન 'કર્મસત્તા બળવાન છે' આ વાક્યથી મનાવી શકતા હતા.

તેમના ધર્મપત્ની રમિલાબેન ઉદાર, હસમુખા અને પર ગજુ હોવાથી ઘરનું તંત્ર ચલાવવામાં ભારે કાબેલ હતા. આડોશપાડોશને પોતાના ઘરની સાધારણ સ્થિતિની ગંધ પણ આવતા દેતા નહિ. તેમજ સાધુ-સાધ્વીજીની વૈયાવચ્ચ-ભક્તિમાં કોઈ દિવસ ટૂંકો હાથ પણ કર્યો નહોતો.

તેમને એક પુત્ર ઉપર સુશીલા અને સૂરજ નામે બે કન્યાઓ હતી.

ટૂંકી ગૃહસ્થાશ્રમીમાં પણ સંતોષ માનતા રમિલા શેઠાણી પોતાની આવડત સારી હોવાની કારણે મહિલા મંડળનું સંચાલક ધ્યાનપૂર્વક કરતા હતા. સાથોસાથ પોતાના પુત્ર-પુત્રીઓમાં ખરાબ તત્ત્વ પ્રવેશ કરવા ન પામે તે માટે પતિની ગેરહાજરીમાં ઘેર જ રહીને નાના ઉદ્યોગો ઉપરાંત ધર્મના પુસ્તકો વાંચવા અને આસપાસની મહિલાઓને કન્યાઓને સત્યોપદેશ આપતા કહેતા કે- **'સ્ત્રીનું ભૂષણ શિયળ છે,** માટે ગમે તેવી પરિસ્થિતિમાં પણ તે મૂષણ કલંકિત ન બને તેનું ધ્યાન રાખવું તે જ ધર્મ છે. બે ચોપડીઓ

ઓછી ભણી હશે તો ચાલશે પણ પોતાના સદાચારમય જીવનને વાંધો આવે તેવો વ્યવહાર ધર્મના નામે પણ કોઈ કાળે ન કરવો. કેમ કે બગડેલા પુરુષથી કદાચ બે પેઢી બગડશે, ત્યારે બગડેલી સ્ત્રીથી સાત પેઢી બગડવા પામે છે.'

બંને બ્હેનોમાંથી સૂરજબેન શરીરે શ્યામ પણ હૈયાના ગોરા, કદમાં ઠીંગણા પણ દીર્ઘદષ્ટિસંપન્ન હતા; માટે પોતાના ધાર્મિક જીવનને સંભાળવામાં ક્યારેય બેધ્યાન થતા નહિ.

જૈન પાઠશાળામાં શિક્ષિકાનું, વ્યાખ્યાનમાં ગુરુદેવોનું અને ઘરમાં પોતાની માવડીનું વક્તવ્ય સૂરજબેનને માટે આગમજ્ઞાન સમું હતું. આ કારણે જ એક દિવસે કોલેજથી આવતા એક વિદ્યાર્થીએ સૂરજ સામે ગંદી ચેષ્ટા અને ગંદી કામના પ્રગટ કરી અને સૂરજબેને બે થપ્પડ તેના ગાલ પર મારી દીધી. લોકો ભેગા થયા અને શરમીંદા તથા રોતીસૂરત બનેલા વિદ્યાર્થીને સૂરજે કહ્યું કે: 'યુવાન શરીરને પ્રેમની આવશ્યકતા નકારી શકાય નહિ પણ મોહની નહિ, કેમ કે મોહ શેતાન છે અને જિંદગીના અસલી તત્ત્વોને નાબુદ કરનાર છે. ઉચ્ચ ખાનદાન, ભણતર, કે સશક્ત યુવા શરીર મોહની ઉપાસના માટે નથી પણ પ્રેમતત્ત્વની પ્રાપ્તિ માટે છે. સ્ત્રી અને પરુષ આ બંને દૈવીતત્ત્વને જન્મ દેનારી શક્તિ છે, નહિ કે આસુર, તામસ કે શેતાન શક્તિને.' વિદ્યાર્થી સૂરજબેનના પગે પડ્યો અને માફી માંગી ત્યારે સુરજે કહ્યું કે, માફી સાચા દિલની હોય તો પરમાત્માના ચરણે માંથું મૂકીને એક જ માગણી કરજે કે: 'હે પ્રભો! હું ભૂખે રહું, સૂકા રોટલા ખાઉં, પારકા ઘરે વાસન માંજુ આ મને કબૂલ છે, પણ જીવનતત્ત્વને ગંદુ ન થવા દઉં તેવી મને શક્તિ આપજે.'

મનોમન સૂરજબેનની પ્રશંસા કરતા સૌ વિદ્યાર્થીઓ, શિક્ષકો પોતપોતાના ઘર તરફ આગળ વધ્યા અને સૂરજબેન પણ પ્રસન્ન ચિત્તે ઘેર આવી.

એક દિવસે પોતાના જ ગામના શ્રીમંત પુત્ર સાથે વિવાહિત થઈને સાસરે આયેલા સૂરજબેનના જીવનમાં તથા પ્રકારની શ્રદ્ધા અન; મક્કમતા હતી, જેનાં કારણે તેઓ એક જ વાતનું રટણ કરતા કહેતા હતાં કે– "૮૪ લાખ જીવાયોનિમાં યદિ મનુષ્યજીવનની શ્રેષ્ઠતા પર પૂર્ણ શ્રદ્ધા હોય તો જીવનને સંયમથી સુરક્ષિત રાખવું જ શ્રેયસ્કર છે. ગૃહસ્થજીવનમાં મુનિરાજોની વીસવસા દયા પાળવાનો મોહ રાખવો તેના કરતાં સવાવિશ્વા દયામાં જ જીવનને ઓતપ્રોત કરવામાં ક્યારે પણ જોખમ આવતું નથી. હિંસા અને અહિંસાના બહુ જ ઉંચા સિદ્ધાંતોના ખ્યાલમાં સંયમ તથા સદાચારી જીવન પ્રત્યે ઉપેક્ષિત રહેવું તે સર્વથા અનુચિત છે; કેમ કે સંયમજીવનને સુરક્ષિત રાખવામાં જ અહિંસાધર્મની આરાધના સમાયેલી છે.

બેશક! જ્યા સુધી પોતાની પૂર્ણ શક્તિ લગાડીને પણ સંયમ સુરક્ષિત રહેતું હોય તો

સોનામાં સુગંધ જેવું છે, અન્યથા બીજા પ્રકારે પણ સંમયધનની રક્ષા કરવામાં અહિંસાને કોઈ જાતનો બાધ આવતો હોય, તેવું ગુરૂદેવોના એકેય વ્યાખ્યાનમાં સાંભળ્યુ નથી. આવા ઉદ્દાત વિચારોની સાથે સાસરે આવેલા સૂરજબેનનું જીવન દિવસે દિવસે, સુગંધિત અને વિશ્વસનિય બનતું ગયું.

ગૃહસ્થાશ્રમ જીવનમાં ક્યારે અને ક્યાંથી વિઘ્ન આવે તેના કલ્પના કરવી અશક્ય છે.....તેમાં પણ ખાસ કરીને યુવા શરીરનું રક્ષાણ કરવામાં હજારો વિઘ્નો આવતા જ હોય છે.....બન્યું પણ એવું કે પોતાના દિયરની જ ખોટી દાનતની ખબર જ્યારે સૂરજબેનને પડી ત્યારે દુ:ખ થાય તે સ્વાભાવિક છે. પ્રસંગ જ્યારે આગળ વધતો ગયો ત્યારે સૂરજબેનને સાવધાની રાખ્યા વિના બીજો માર્ગ નથી રહ્યો અને એક દિવસ ઘરમાં જ્યારે સૂરજબેન એકેલા જ કામ પતાવી રહ્યા હતા ત્યારે બદદાનતથી દિયર ઘરમાં આવીને સતામણીપૂર્વક યદ્વાતદ્વા બોલવા લાગ્યો. સૂરજબેને સમજાવતાં કહ્યું કે: દિયરજી! તમારી ખાનદાનીમાં આવા ગંદા વિચારો અને આચારો તમારા માટે શોભાસ્પદ નથી, જૈન પાઠશાળામાં જીવવિચારનો અભ્યાસ કર્યા પછી, ભક્તામર અને અજિતશાંતિ સ્તોત્રો વડે તીર્થંકરને સ્તવ્યા પછી, સોનાચાંદિના વરખથી વીતરાગને પૂજ્યા પછી અને મહાવ્રતધારી ગુરુઓના વ્યાખ્યાનો શ્રવાણ કર્યા પછી, પરસ્ત્રી પ્રત્યે અને તેમાં પણ માવડી સમા ભાભી પ્રત્યે આવા ખ્યાલાતોથી તમે જાણીબુઝીને જૈનધર્મને કલંકિત કરી રહ્યાં છે, ગુરૂઓના વ્યાખ્યાનોની મશ્કરી કરી રહ્યાં છે. તેમ તમને નથી લાગતું?

પણ કામદેવના નશામાં મર્યાદાથી બહાર થયેલો દિયર એક પછી એક દાવ રમી રહ્યો છે અને સૂરજબેન પોતાના શિયલધનની રક્ષા પ્રત્યે પૂર્ણ જાગૃત છે, આટલું છતાં આ નાપાક વાતનો ઈશારો પણ સૂરજે પોતાના પતિને કે સાસુ સસરાને કર્યો નહિ.

આજથી ૪૧ વર્ષ પહેલા શાસનદીપક મુનિરાજ શ્રી વિદ્યાવિનયજી મહારાજ પોતાની શિષ્ય મંડળી સાથે કરાંચી સિંધથી વિહાર કરતા કચ્છ-ભૂજ પધાર્યા અને ત્યાંથી પૈદલ સંઘ લઈ ભદ્રેશ્વર પધાર્યા હતા જ્યાં વાર્ષિક મહોત્સવનો કાર્યક્રમ પણ હતો. ગુરૂજીના વ્યાખ્યાનો સાંભળવા માટે કચ્છવાસીઓની હાજરી અભૂતપૂર્વ હતી. ૬-૭ દિવસ સુદી વ્યાખ્યાનો ચાલ્યા અને હજારોની જનતાએ લાભ લીધો હતો તે પ્રસંગે પોતાના સાસુ-સસરા આદિની સાથે સૂરજબેન પણ તીર્થયાત્રાએ આવ્યા હતા પરંતુ વ્યાખ્યાનના સમયની તેમને માહિતી ન હોવાથી પૂજાપાઠ માટે દેરાસરમાય પૂજા કરવા મસ્ત આવેલા સૂરજબેન એકાગ્રચિત્તથી પરમાત્માની પૂજામાં મસ્ત હતા બદદાનત કહો કે ગમે તે કહો તેમના દિયર કુટુંબ સાથે ન આવતા એકલા જ આવ્યા હતા અને દેરાસરની આસપાસ તકની રાહ જોતા હતાં. જ્યારે તમને ખબર પડી કે વ્યાખ્યાનમાં એકરસ બનીને જનતા

શ્રવણરસ લૂંટી રહી છે અને સૂરજ દેરાસરમાં લગભગ એકલી છે, કર્મસંજોગ હશે, તે દિવસે વ્યાખ્યાનનો વિષય "ગૃહસ્થાશ્રમનું બ્રહ્મચર્ય વ્રત" હતો.

આવા સમયનો લાભ લઈને ચોરપગલે દિયર મંદિરમાં આવ્યો અને મૂળ ગંભારામાં પૂજા કરતી સૂરજની શરીર પર હાથ નાખી દીધો

કેટલીક ક્રિયાઓ કરવામાં સરળ હોય છે પણ તેનું પરિણામ અત્યંત ભયાનક હોય છે. માટેજ અનુભવી કહે છે, સેંકડો વિંછુનાં ડંક કરતા પણ પાપના સંસ્કારો ઘણા જ ખતરનાક હોય છે. યદિ તમારા મનને કે ઈન્દ્રિયોને કંટ્રોલમાં ન કરી શક્યા તો ગમે ત્યારે પણ ભર બજારમાં માર ખાવાના દિવસોનો અનુભવ કર્યા વિના છુટકો નથી.

અકસ્માત્ થયેલા અડપલાથી ચમકી ઊઠેલા સૂરજબેને ગમે ત્યારે પણ છેલ્લો નિર્ણય કરવો જ પડશે. તો પછી આજે તે કરી લેવામાં ક્યો વાંધો ? તેમ સમજીને સૂરજે પોતાના દિયરને ગળાથી પકડયો અને ૪-૫ થપ્પડ જે તાકાતથી મારી કે બિચારો દિયર સર્વથા કિંકર્ત્તવ્યમુઢ બની દયાયાચના કરે તે પહેલા જ દેરાસરથી બહાર નીકળીને સીધો મોટરમાં બેસી ઘર ભેગો થઈ ગયો.

થોડી "હા....હું...." થઈ અને વ્યાખ્યાનમાં તેનો પડયો પડ્યા. ૨-૫ મીનિટ વ્યાખ્યાનમાં ખલેલ પડી તે સમયે ધ્રુજતા હૃદયે સૂરજબેન પણ વ્યાખ્યાનમાં આવીને બેસી ગયા હતાં.

મને બરાબર યાદ છે કે પૂજ્ય ગુરુજીએ તે સમયે જનતાની તાલીઓના ગડગડાટ સાથે સૂરજબેનને ધન્યવાદ આપતા કહ્યું હતું કે : આજના મારા વ્યાખ્યાનના અનુસંધાનમાં વીતરાગ પ્રભુના મંદિરમાં જે અનિચ્છનીય બનાવ બન્યો અને સૂરજબેને જે રીતે કામ પતાવ્યું તે માટે તેમને મારા હાર્દિક ધન્યવાદ છે."

ભાગ્યશાળીઓ! શારીરિક રીતે કમજોર બનેલી વ્યક્તિની હિંસા અને અહિંસા પણ વાંઝણી રહેવા પામે છે....આવી પરિસ્થિતિમાં પણ સૂરજબેને જે સમયસૂચકતા દાખવી છે તે માટે કચ્છની મર્દાનગી માટે મને માન ઉપજે છે અને વ્યાખ્યાનની ધારા તેજસ્વિની બનીને હજારો સ્ત્રી-પુરૂષોની આંખ ભીની કરાવીને સમાપ્ત થઈ. પ્રસંગ એટલો ઝડપથી બન્યો અને પત્યો કે બે - ચાર આગેવાન સિવાય આ પ્રસંગ આજે પણ અણઉકેલ્યો' જ રહ્યો છે. અને એકદા સૂરજબહેનનું ઉગ્ર રૂપ જોઈને દિયરજીએ ભાભીના પગમાં માથું ઝુકાવી રડતા હૃદયે કહ્યું કે -ભાભી! જીવવિચારનું રહસ્ય, ભક્તામરનું તત્ત્વઅને જીવન તત્ત્વની પવિત્રતા તમારી પાસેથી શીખ્યો અને હું પવિત્ર બન્યો છું. ભાભીએ દિયરના માથા પર પ્રેમભર્યો હાથ મુક્યો. આજે પણ આ પ્રસંગની જાણકારી ઘરના એકેય મેંબરને પડી નથી....

ધરૂલો કુદ્યો ને નીર વહી ગયાં...

-મુનિ પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી

સાંભળ્યું હતું કે પૂર્વના કાળમાં દેશ-પરદેશથી વિદ્યેચ્છુકો ભારત આર્યાવર્તની નાલંદા, કાશી, તક્ષશીલા વિગેરે વિદ્યાપીઠોમાં ભણવા માટે આવતા હતા. શું કારણ હતું એમને બધાને સ્વદેશ છોડી ભાણવા માટે ભારત આવવું પડે ? એવું કયું તત્વ ભારતમાં વિદ્યમાન હતું કે જે ત્યાંના રહેવાસીઓને આ તરફ Attraction જન્માવતું હતું ?

એ સવાલ ક્યાર નોય મગજમાં ધુમરાતો હતો.

સમાધાન મળી ગયું શાંતિની પળોમાં.

લગભગ પાંચેક હજાર વર્ષો પહેલાં આપણા આ દેશમાં સાંદિપની મુનિનું ગુરૂકૂળ ચાલતું હતું. ત્યાં ઘણાય છાત્રો વિદ્યોપાર્જન કરતા હતા. એ જમાનામાં ગુરૂઓ ઉચ્ચ-નીચ ને સમદષ્ટિ થી જોતા હોતા. એનાજ પરિણામે તો સાંદિપની ઋષિપાસે ભણવા આવનારાઓમાં કૃષ્ણ-બળરામ જેવા ગર્ભશ્રીમંતો પણ હતા. તો સુદામા જેવા નિર્ધનોનીય ત્યાં કાંઈ ખોટ ન હતી.

રાજાના પુત્રો હોવા છતાં કૃષ્ણ અને બલરામ ગુરૂની ગાયો ને ચરાવ લઈ જવામાં નાનપ સમજયા ન હતા. વનમાંથી લાકડાં વીણી લાવતાં યે અનહદ આનંદ એમને થતો હતો.

ટાઢ કે તડકો, રાત કે દિવસ જોયા વિના ગુરૂનું કામ કરવામાં તેઓ સંતોષ અનુભવતા હતા.

સાંદિપની ઋષિનો પણ તેમના માટે સગા દિકરા જેવોજ પ્રેમ હતો માટે તો શ્રીકૃષ્ણે ગુરૂદક્ષિણામાં ગુરૂપુત્ર જે મરણ પથારીએ છેલ્લા શ્વાસ લઈ હ્યો હતો તેને જીવતો કરી દીધો હતો.

એ જમાનો હતો કે ઉલટપૂર્વક (ઉલ્લાસસાથે) ગુરઓ શિષ્યોને વિદ્યાનું દાન કરતા. આજે જમાનો બદલાઈ ગયો છે અધ્યાપકો ને કામ ના ભાર તળે વિદ્યાર્થીઓ ના આંતરિક જીવનમાં ડૂબકી મારવાની ફૂરસતે જ નથી.

કેવળ અધ્યાપકો નો જ વાંક નથી. આજે વિદ્યાર્થીઓ ને પણ ગુરૂ કાંક ટાંપું ભણાવે તો તે ટાળવાની કોશિશ મહત્તમ પ્રયત્ને કરવાનો. કદાચ ક્યાંક આંખની શરમ નડશે તો યે અનિચ્છાએ કમને તે ટાંપુ પારપાડી સંતોષ લેવાનો. પણ પહેલાં જેવી સદ્દભાવના ગુરૂપ્રત્યે કેળવવાની ક્યાં આજે વિદ્યાર્થીઓ નીયે તમન્ના છે ?

શિક્ષણ જરૂર વધ્યું છે આજે. પણ કહેવા દો કે ભાવનાનું તો લગભગ દેવાળું જ

નીકળવાની તૈયારીઓ થઈ ચૂકી છે.

આજ નો માનવ જીવન જરૂર જીવી રહ્યો છે. તે પણ શ્વાસોચ્છ્વાસ લેવા પૂરતું પણ માનવજીવનને જીવવાની કળા તો મરી પરવાની તૈયારીઓ થઈ ચૂકી છે.

એક વ્યક્તિની બીજા વ્યક્તિ પ્રત્યેની ફરજો ચૂકાઈ ગઈ જીવનના વ્યવહારો પણ એવા તો પાંગળા બની ગયા કે વ્યક્તિઓને પરસ્પર પ્રેમ સ્નેહ સદ્ભાવ જગાડવાને બદલે ઈર્ષ્યા-દ્વેષ અને દુર્ભાવો વધારવા તરફ પ્રેરી દીધા.

મારે જીવવું છે એ વાત ચોક્કસ છે. પણ એનો અર્થ એવો નથી કે કોઈના જીવતર ના ભોગે પર મારે જીવવુંજ છે, એ કદાચ ધબકારા ધબકતા હશે પણ અંદરનું સાચું જીવન તો ક્યાંય વિચ્છેદ પામ્યું હશે.

મારા જીવતરથી કોઈપણ જીવને નુકસાન ન થાય. એવા મહાન વિચારો નું જીવન હતું આપણા પૂર્વજોનું.

શાસ્ત્રોમાં દ્રષ્ટાન્તો નથી સાંભળ્યા પેલા મહાપુષોનાં એક કબૂતરની રક્ષા કાજે મેઘરથ રાજા પોતાના પ્રાણ હોડમાં મુકવા તૈયાર થયા હતા ને! ક્રૌંચ પક્ષી ને બચાવવા ખાતર મેતારજ મુનિવરે પોતાના જીવનની આહુતિ આપી દીધેલી! એક નાજુક સસલાની જીવરક્ષા કાજે મેઘકુમારે હાથીના ભવમાં કેટલી કરૂણા દાખવેલી!

આવાં તો અનેક દ્રષ્ટાંતો મળી આવશે જો શોધવા જઈશું તો.

આ જ તો આકર્ષણ હતું જે દેશ પરદેશના વિદ્યાર્થીઓને ભારતમાં ભણવા ખેંચી લાવતું હતું. ભારતની મહાન ઋષિ સંસ્કૃતી ની જ વિશેષતા હતી. હવે તો એ સંસ્કૃતિ પણ oxyzen ઉપર ટકી રહી છે. છેલ્લા શ્વાસ ગણી રહી છે. એવી એ મહાન સંસ્કૃતિ નો ઘડા જે ભરેલો હતો. તે ફૂટી ગયો છે. સુસંસ્કારોનાં નીર હવે વહેતાં થઈ ગયાં છે.

જો મહાપુરૂષો આ પ્રત્યે દુર્લક્ષ સેવશે તો બાકી છે બચવાનું શું આપણા દેશમાં?

આપણા દેશનું શિક્ષણ હવે લુટત પ્રાય: થતું આવ્યું છે. ભણનારાઓને હવે ભારતની ભૂમિ છોડી અમેરીકા, યુરોપ અને ઈંગ્લેન્ડ જેવા સંસ્કૃતિ વિહીન દેશોમાં જવાનો શોખ જાગ્યો છે!

ત્યાં ભણીને આવનારા ત્યાંનાજ સંસ્કારમાં ઉછરેલા યુવાનોને પોતાનો જ સમાજ ભોટ, અણઘડ અને પછાત લાગે તેમાં આશ્ચર્ય શું છે?

જ્યાં સદ્વર્તનની જગ્યા સર્ટિફિકેટોએ લીધી હોય ત્યાં ઉંચા સર્ટિફિકેટ મેળવવા ચાહે ગમે તેવી ગેરરીતિઓ આચરતાં, સદ્વર્તનને નેવે મુકતાં કોણ અંદરથી હચમચી ઉઠશે?

ભારતની સંસ્કૃતિનું જેને જ્ઞાન નથી તેને ભારતની ભૂમિ કાજે કેવો ગર્વ રહેશે?

માટે જ તો આજના વાલીઓને મારે એ કહેવું છે કે Convent School નો મોહ છોડી બાળકો ને આપણી મહાન સંસ્કૃતિનું સાચું જ્ઞાન આપવું એજ આ ટાણે આપણી ફરજ છે. એજ આપણું કર્તવ્ય છે.

નામ ની જેમને ખેવના નથી એવા એક અનામી વ્યક્તિ શેઠશ્રી દેવજીભાઈ ચાંપશીભાઈ દેઢીયા

કચ્છના પ્રવેશદ્વાર સમું ગાંધીધામ શહેર આજે પ્રગતિના પંથે ઝડપ આગલ વધી રહ્યું છે. આ શહેરમાં આજે લગભગ જૈનોની વસતી બે હજાર આસપાસની હશે. પરંતુ એ બે હજારમાં મૂર્તિપૂજક સ્થાનકવાસી તેરાપંથી અને તેમાં પણ તેના પેટા વિભાગો ધરાવતા અચલગચ્છ-તપાગચ્છ-ખતરગચ્છ છે. છ કોટી, આઠ કોટી, નાનીપક્ષ મોટીપક્ષ વિ. સંપ્રદાયના બધાનો સમાવેશ થાય છે. અને ખરેખર આશ્ચર્ય એ વાતનું છે કે આ બધાજ સંપ્રદાયના અહીં ગાંધીધામ વસતા જૈનો કોઈ પણ પ્રકારના ભેદભાવ વગર સાથે મળી ને રહે છે. દરેક સંપ્રદાયના ધાર્મિક પ્રસંગો બધા જ સાથે મળીને ઉજવે છે. પર્યુષણ બાદ થતા સ્વામી વાત્સલ્યમાં બધા જ ભાગ લે છે. અને કોઈ પ્રકારના ભેદભાવ રાખ્યા વિના એક સંપ્રદાયની વ્યક્તિ બીજી સંપ્રદાય માટે શક્તિ મુજબ ખર્ચે કરે છે. કાલો આપે છે, આવું હું માનુ છું કે અન્ય સ્થલે નહિં હોય.

તિથીના ઝગડા ને બાજુ ઉપર મૂકી દરેક સંપ્રદાય પોત પોતાના ગુરૂની આજ્ઞા મુજબ તિથિયોંનું પાલન કરે છે. છતાં પણ એ માટે આપણા આચાર્ય-દેવોમાં રહેલા હઠાગ્રહ જેવો લેશ માત્ર હઠાગ્રહ અહીં નથી. તેનું એક કારણ છે અહીં ના સંઘ ના મુખ્ય ટ્રસ્ટી શ્રી દેવજીભાઈ ચાંપશીભાઈ દેઢીયા, જેઓ કચ્છના મેરાઊ ગામના રહેવાશી છે. વરસો થી ગાંધીધામમાં વસે છે. તેમના લઘુ બંધુ શ્રી નાનજીભાઈ પણ તેમની સાથે જ છે. આ બંધુ બેલડી ને જૈન સમાજમાં ઘણા જાણતા નથી. કારણ આ બંને પણ પોતે કોણ છે તે કહેતાં ઘણી જ શરમ અનુભવે છે. યશ કીર્તિ કે નામનાની આ બંધુ બેલડી ને કોઈ જ ખેવના નથી અને એટલે જ જાહેરમાં તેઓ ઘણા જ ઓછા જોવામાં આવે છે. અને ઉતાં પણ ફક્ત ગાંધીધામમાં જ નહિ પરંતુ હું તો માનું છું કે તેઓ બંને સમગ્ર જૈન સમાજ માટે ઘણા જ ગુપ્ત કાર્યો કરે છે. જેની નોંધ પણ ન લેવાય તેવું આ બંને શ્રેષ્ઠિયોં ઈચ્છે છે.

અમો ત્રણ-ચાર જણા ગાંધીધામના સેકટર એરીયામાં નવું જિનાલય-ધર્મશાળા બનાવવા માટે તેમની પાસે ફંડ લખાવવા ગયા કારણ અહીં ગાંધીધામમાં ફંડની શરૂઆત તેમના જ નામથી કરવાની દરેકની ભાવના હોય છે. અમે એમને ઘરે ગયા બંને ભાઈ શ્રી દેવજીભાઈ અને શ્રી નાનજીભાઈ બેઠા હતા તેમને આ બધી બાબતની ખબર તો હતી જ એટલે ફાલાની રકમ જાહેર કરવા શિવાય કંઈ કરવાનું ન્હોતું એટલે અમો એ વિનંતિ કરી કે આપની ઈચ્છા હોય તે લખાવો તો બંને તરફ થી જવાબ મળ્યો કે તમારી ઈચ્છા હોય તે લખી નાખો અને અમો એ રૂ. ૧૧૧૧૧૧) એક લાખ અગ્યાર હજાર એક સો અગ્યાર લખાવવા માટે વિનંતિ કરી અને કોઈ પણ પ્રકારની આનાકાની વગર તેમાણે હા પાડી. મને તો લાગે છે કે અમોએ એ આંકડો ન કહ્યો હોત અને બંને ભાઈયો ને જ તેમની ઈચ્છા મુજબ લખાવવાનું કહ્યું હોત તો તેઓ એથી પણ વધુ રકમ લખાવતે આ એમની સમાજ અને ધર્મ પ્રત્યેની ઉચ્ચ ભાવનાનું ઉદાહરણ છે. અને એ પ્રસંગ ઉપર થી જ આ બંને ઉપર કંઈક લખવાની મને ઈચ્છા થઈ.

વ્યવસાયે શાહ ઈંજીનિયરીંગ કું. ના નામે બંધ-રોડ અને પુલ ના મોટા મોટા કરોડોનાં કામ કરે છે. અને સરકારમાં એમની એવી પ્રતિભા છે કે જ્યાં સુધી શાહ એંજીનિયરીંગ કામ લેવા તૈયાર હોય તો અન્ય કરતાં થોડા વધુ ભાવે પણ કામ આપવા સરકારી અમલદારો તૈયાર હોય છે. અને તેમના કામ સમયની મુદત પહેલાં તે ઓ પુરાં કરે છે એ તો ઠીક પરંતુ તેમનાં કામોમાં ક્યાંય પણ હલકો કે ઓછો માલ વપરાતો નથી અને એટલે જ તેમના કરેલા કામો બંધ. પુલ કે રોડ મજબૂત હોય છે. અને આ વ્યવસાયના કારણે તેમના પુત્રો વિ. ને ઘણે સમય આવા કામો ની સાઈટ ઉપર રહેવું પડતું હોવા છતાં આ બંને ભાઈયો તો ઠીક પરંતુ તેમના વંશ વારસો-પુત્રો પણ સવારમાં નવકારશી અને સાંજે ચૌવિહાર રાખતા હોય છે. સાઈટ ઉપર હોવા છતાં દેવ દર્શન કરવાનું ચુકતા નથી. તો પછી આ બાંધવ બેલડીનું તો પુછવું જ શું? તેમની બંને ની પ્રવૃત્તિ તો હવે ધંધાકિય રહી નથી તેઓ ઘણા સમય થી પોતાના આત્માના કલ્યાણ માટે જ પ્રવૃત્ત છે. એના દૃષ્ટાંતો આ રહ્યાં-

કચ્છમાં વિહારતાં કોઈ પણ. સાધુ-સાધ્વીજી ગાંધીધામ થી નિકલતા કોઈ પણ રસ્તે પંદર-વીશ કિલોમીટર દૂર હોય જ્યાં કોઈ જૈનના ઘર ન હોય તેવા સ્થલે. તેમના આહાર પાનીની વ્યવસ્થા વરસો થી શ્રી દેવનભાઈ સંભાલે છે. એક વાત નું મને પણ દુઃખ છે કે તેમને આ કામમાં વધુ માં વધુ સહયોગ આપનાર તેમનાં ધર્મપત્નિ શ્રીમતિ રતનબેન હમણાં થોડા સમય પહેલાં અવસાન પામ્યાં-જૈન સમાજ ના સ્ત્રી વર્ગમાં રતન સમાન રતનબેન ચાલ્યા જતાં શેઠ શ્રી દેવનભાઈ ના મનમાં શૂન્યાવકાશ જરૂર છવાઈ જાએ પરંતુ ધર્મના અપૂર્વ રંગે પૂરેપૂરા રંગાયેલા તેમણે તેમના ધર્મપત્નિ ના અવસાન વાદ તો ધંધાકિય પવૃત્તિ એકદમ છોડી ધાર્મિક પ્રવૃત્તિમાં સંપૂર્ણપણે લાગી ગયા. અને એટલે સુધી કે શેઠ ને મળવું હોય અને ફોન કરીયે તો જવાબ મળે તેઓ શ્રી સામાયિકમાં બેઠા છે. આવું બપોર નાં સમયે પણ બને છે. આવા બંધુ સાધુ સાધ્વીની વૈયાવચ્ચમાં પુરેપુરા ગલાબુડ ડુબેલા છે. છતાં પણ આવી વૈવાબચ્ચ પામનાર સાધુ-સાધ્વીમાંથી ઘણાય તેમને નામ થી. ઓળખતા પણ નથી અને આ બંને ભાઈ પોતાની ઓળખ આપતા પણ નથી. જે કંઈ કરે છે તે પોતે કરે છે છતાં તેઓ નામ આપે છે. ગાંધીધામનો શ્રી સંઘ કરે છે. આવી છે તેમની બંનેની નિષ્પૃહ વૃત્તિ.

કોઈ પણ જૈન ભાઈ પોતે મુશ્કેલીમાં હોય અને દેવજી-નાનજી ની જોડી પાસે જાએ અને પોતાની મુશ્કેલી જાણાવે તો તે વ્યક્તિ કોણ છે. ક્યાંના છે એવી ઘરે આવનાર કો, નિરાશ થઈ પાછું ફરતું નથી. પોતાની જરુરીયાત પૂરી કરીને જ બહાર આવે છે.

શ્રેષ્ઠિ શ્રી દેવજીભાઈ અને શ્રી નાવજીભાઈ અચલગચ્છ ના હોવાં છતાં પણ ગચ્છના ભેદભાવ વગર ગાંધીધામ શ્રીસંઘનાં દરેક કાર્યોમાં તન મન અને ધનથી અનહદ ફાલો આપે છે, અને તેના ઉદાહરણ રૂપ ગાંધીધામમાં આજે જે ઈંક સું નિજાલય અને ઉપાશ્રય બન્યાં છે તેમાં તેમનો લખાવેલો ફાલો તો છે જ વણલખાવેલો તેમણે ઘણો ખર્ચ કર્યો છે.

સવારમાં સેવા-પૂજા કર્યા પછી જ ધ્યાન કરવાનો બંને ને નિયમ છે સવારમાં દેહરાસરમાં એક [illegible] કરતા પણ વધુ સમય પૂજામાં ગાળે છે. અને તે પણ એક ધ્યાન

શેષ પૃષ્ઠ 22 પર.....

जैनधर्म - सर्वोत्कृष्ट आचार संहिता

जैनधर्म-

- सर्वज्ञों द्वारा प्ररूपित परिभाषित एवं प्रतिपादित धर्म है।
- यह अनादिकाल से प्राणियों का मार्गदर्शन करता आ रहा है।
- इसे किसी ने न जन्म दिया है और न इसे कोई समाप्त कर सकता है।
- समय परिवर्तन के साथ यह लुप्त हुआ है और तीर्थंकर ने समवसरण में विराजमान होकर पुनः इसकी प्रतिष्ठा की है।
- यह विश्व के समस्त धर्मों में सर्वोत्कृष्ट है।

इसके परिपालन से—

★ विश्व की प्रत्येक समस्या का समाधान प्राप्त किया जा सकता है, यह विश्व धर्म है।

★ भौतिक आचरणों से जीव दूर हो आध्यात्म के पवित्र प्रवाह में प्रवाहित होने लगता है। यह परमुच्च आध्यात्मिक विचार मंथन है।

★ मानव जीवन सही सुख समृद्धि प्राप्त कर सकता है। यह सर्वोत्कृष्ट आचार संहिता है।

★ आत्मा परमात्मा के स्वरूप रूपान्तरित हो सकती है, होती है इसमें आत्म विकास का मूल मंत्र निहित है।

इसके लिये—

★ बर्नाड शा ने कहा "यदि पूनर्जन्म जैसी कोई बात है तो मेरी अन्तिम इच्छा है कि मैं जैन कुल में जन्म प्राप्त करूं।"

★ डॉ. जॉन्स हर्टल ने कहा "मैं अपने देशवासियों को दिखाऊँगा कि कैसे उत्तम नियम और उंचे विचार जैन धर्म और जैनाचार्यों में हैं। ज्यों-ज्यों मैं जैनधर्म और उसके साहित्य को समझता हूं त्यों-त्यों में उनको अधिक पसंद करता हूं।"

★ सिस्टर ओर्डिकार्जरी ने कहा "जैनधर्म एक ऐसा अद्वितीय धर्म है जो कि प्राणींमात्र की रक्षा करने के लिये क्रियात्मक प्रेरणा देता है। मैंने ऐसा दयाभाव किसी धर्म में देखा नहीं है।"

★ डा. हेसीटोरी ने कहा "जैनधर्म बहुत बहुत ही उंची पंक्ति का है इसके मख्य तत्व विज्ञान स्वरूप के आधार पर रचे हुए हैं।"

★ योगी जीवानन्द परमहंस ने कहा— "आबाल्याकाल ७० वर्षों से जो कुछ अध्ययन किया और वैदिक धर्म को बांधे फिरा सो व्यर्थ-सा मालूम होने लगा....प्राचीन दर्म परम्-धर्म, सत्यधर्म रहा हो तो वह जैन धर्म ही!"

यह—

- इतिहास में सदैव अजेय रहा। खण्डन-मंडन का अंधकार भी इसे पराभूत न कर पाया।
- अनादिकाल से यह आध्यात्मिक ज्योति शिखा प्रज्ज्वलित कर अनन्त आत्माओं के उच्च विकार को यशस्वी बना रहा है।
- महान उपकारी दर्म है जिसके उपकार से मानव संस्कृति कभी उऋण नहीं हो सकेगी।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक
अमर
टूथपेस्ट - टूथपाउडर

**नये युग की हर्बल-लहर
जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और
चमकता रखे.**

अमर टूथ पाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. रु. ७.५०
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. रु. ८.५०
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. रु. ११.५०

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माताः स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्रीः ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी., कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।